खोज री पिया को निज घट में

वचन सत्संग हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

(सत्संदेश दिसंबर 1960 में प्रकाशित प्रवचन)

बन्दे तू सोच जरा खुदा है कहाँ नहीं ।
वह कौन सी ज़मीं है जहां आसमां नहीं ।।

मैं देखता हूं हर तरफ अब जलवा यार का ।
मेरी नजर में अब वह अयाँ है, निहाँ नहीं ।।

तुझको अजीज हूं तो सभी को अजीज हूं ।
तू मेहरबाँ न हो तो कोई मेहरबाँ नहीं ।।

तेरी सिफत लिखूं तो सही, दिल नहीं मगर ।
तेरी सना करूं तो सही पर जुबाँ नहीं ।।

इन्साँ को चाहिए कि सदा दिल को खुश रखे ।
क्या उसकी जिन्दगी है कि जो शादमाँ नहीं ।।

डरना किसी बशर का किसी शै से है फिजूल ।
वह कौन है कि जिसका खुदा पासबाँ नहीं ।।

गोबिन्द रहे जहाँन में बे नामो बे निशाँ ।
नामों निशान वालों का नामों निशाँ नहीं ।।

आज दिन तक जितने महापुरुष आये हैं, ख्वाहें किसी समाज में आये हैं, वह यही कहते हैं कि एक ज़ाते हक (प्रभु) है, जो सब जगह मौजूद है। कोई ऐसी जगह नहीं जहां पर वह नहीं है। गुरु नानक साहब मक्के गये। वहाँ रात को वह लेटे हुए थे। पाँव मक्के शरीफ की तरफ थे। तो वहां जो झाड़ूबरदार था, उसने आकर उठाया। अरे भई तुम खुदा के घर की तरफ पाँव पसारे लेटे हो। कहने लगे भई मुझे तो हर तरफ ही खुदा का घर नजर आता है। जिस तरफ तुमको नहीं नजर आता तुम उधर कर दो। वेद भगवान कहता है, यजुर्वेद में आया है शायद कि वह परमात्मा इस सारी सृष्टि को ढांपे हुए है। यही और महापुरुष कहते हैं -

एह जग सच्चे की है कोठड़ी सच्चे का विच वास।

गुरबाणी में फिर कहा -

जेता कीता तेता नाँव,विण नावें नहीं कौई ठाँव ॥

कोई जगह ऐसी नहीं जहां वह नहीं। सारे महापुरुष जो आज दिन तक आये, इस Realisation (अनुभव) को पाया, उन्होंने तो यह बयान किया कि वह हर जगह है। राम किसको कहते हैं ? जो रम रहा है। वह हाज़र-नाज़र है। जर्रे-जर्रे में उसी का जलवा है। मगर हम लोग क्या जानें । मछली पानी में रहती है, पूछती है पानी कहाँ है ?

जल में मीन प्यासी यह देख मोहे आवे हाँसी ।

हम उसी में रह रहे हैं। हमारा जीवन आधार वही है। मगर हम उसी की तलाश में सरगरदाँ हैं, मिलता नहीं कहाँ है। समझे ।

सदियों फिलासफी की चुनांओ चुनीं रही ।
मगर खुदा की बात जहाँ थी वहीं रही ॥

सैकड़ों वर्षों से, हजारों वर्षों से, महापुरुष, महात्मा, प्रभु का जिकर करते चले आये। ज़ाते हक कहो, Reality कहो Ultimate Goal कहो या God कहो परमात्मा कहो, कोई कुछ कहो। वह जाते हक है। यह सारा उसी का Expression (विकास) है, वह सबका जीवन आधार है। क्या वह बयान में आ गया है ? अभी तक बयान नहीं हो सका। हाँ सच्ची बात तो यही है। जिसके आधार पर सब कुछ चल रहा है उसको हम कैसे जान सकते हैं, आधार को। जो चीज़ आधार पर चल रही है, वह उसको नहीं जान सकती है। और जो चल रहा है, मशीनरी जो चल रही है, तो पावर हौस उसकी Background (आधार) है, मगर वह (मशीनरी) उसके मुतल्लिक क्या जाने ! तो इसलिए महापुरुषों ने जब हकीकत को पाया है, तो देखा कि दुनियां उसी की (प्रभु की) तलाश में सरगदान है। इसलिए जिसको हम मजहब कहते हैं ना, यह प्रचलित हुए। मजहब किसको कहते हैं ? इसी को पन्थ कहते हैं। इसी को रास्ता कहते हैं। The way back to God मजहब के लफजी मायने, पन्थ है, रास्ता है। कहाँ जाता है ? उसी को जिसकी हमको तलाश है। तो उस रास्ते को पाने के लिए To the way back to God यह मजहब राजय (प्रचलित) किये गये। कुदरती बात है।

एक आदमी का कर्म, कर्म है। दस, बीस, पचास हजार, आदमी का वही कर्म, धर्म बन जाता है। धर्म कर्म ही है। मगर जमायती (सामाजिक) कर्म का नाम धर्म है। यह धर्म बनाया

गया। भई क्या करो ? आपको पता है, कालिज में जाने के लिए पहिले मैट्रिक होना चाहिए। दसवीं पास करना चाहिए। Elementary steps (शुरुआत) जमीन की तैयारी कहो, यह पहला पहलू रहा है। यह (समाजें) बड़े Noble purpose (उच्च आदर्श) से बनाई गई थी, यह जितनी भी समाजें हैं, यह School of thought (विचार धारायें) हैं, जिसके लेबल हम लगाये बैठें हैं, किसलिए ? कि हमें वह रास्ता मिल जाये जो हमारे, प्रभु के घर को जाता है और हम दोजन्में बने। If you do not born anew you cannot enter the kingdom of God. जब तक तुम दोजन्में नहीं बनते, नई दुनियां में जन्म नहीं लेते, पिण्ड, जिस्म-जिसमानियत, से ऊपर नहीं आते, प्रभु की दरगाह में नहीं जाते। तो इसके लिए समाजें बनाई गई, School of thought. किसी समाज में रहना एक बरकत है। मगर यही समाजें और मजहब बनाए तो आज़ादी के लिए थे। यह हमको आज़ादी देने वाले थे, मजहब। असल मजहब याद रखो आज़ादी बख्शने वाली चीज़ है। और आप देखो कि जिस समाज में आप दाखिल हुए हो, क्या आप आज़ाद हो गए हो ? सवाल यह है। आज़ादी कहो, मुक्ति को पाना कहो, Liberation कहो, बन्धनों से आज़ादी कहो, जन्म-मरण से रहित होना कहो, बात एक ही है। क्या तुम आज़ाद हो गए ? आज़ाद हो गए हो तो मुबारिक रहे। अगर उलटे और उलझनों में फंस कर बन्धन में आ गए हो, तो भई जागो। होश में आओ। समझे ! मजहब सच्ची आज़ादी देने वाले हैं। मगर हम जब उस आदर्श को जिसके लिए किसी समाज में हम दाखल होते हैं, उसको दर-ब-दर कर देते हैं, तो फंस जाते हैं। वहां पर तंगदिली, तंग-नज़री, तास्सुब और कट्टरपन आ जाता है।

चाले थे हरि मिलन को बीच ही अटकियो चीत ।

कबीर साहब फरमाते हैं कि चले तो थे बड़े Nobel purpose (उच्च उद्देश्य) से, कि वह रस्ता हमको मिल जाये, रस्ते चलके हम अपनी हकीकत को पा जाये, यह जो हकीकत सबमें जलवागार हो रही है।

यह हकीकत जलवागर दर कुफ्रो इसलामस्तो बस ।
इख़तलाफ़ाते मज़ाहिब जुमला अवहामस्तो बस ।।

यह भेद-भाव Individual whims (व्यक्तिगत वहमों) का नतीजा है। अलेहदा अलेहदा दो बातें -

अज़ तअस्सुब कासाये शेखो ब्राह्मण शुद जुदा ।

तंग-दिली, तंग-नज़री, कट्टरपन से, भाई-भाई के प्याले जुदा हो गये। यह मजहब बने

थे मिलाने के लिये। सब तरफ से, सब बन्धनों से आज़ाद करने के लिये। वही चीज़ बड़े Noble purpose से बनाई गई। मगर उस Noble purpose को दर बदर करके, हम उनकी जकड़ों में फंस गये। नतीजा सामने हैं आपके। सच्चा मजहब आपको आज़ादी देता है। कई भाई, कोई हिन्दू है, कोई सनातनी है, कोई आर्यसमाजी है, कोई सिख भाई है, कोई यहूदी है, कोई प्रोटेस्टेटन्ट, कोई रोमिन कैथलिक है। भई हम इन समाजों को, आर्य समाजी सनातनी बन गया या सिख सनातनी बन गया। एक दूसरे से समाजें बदली तो भाई असल रस्ता तो नहीं बदला। जिसके भेख बदले, गुरुबाणी में आता है -

बहु भेख किया देही दुःख दिया । सौवे जिया अपना किया ॥

भाई जिस्म के लेबल बदलने से प्रभु नहीं मिलता है। यह बाहरी पहला कदम है। मुबारिक है। किसी समाज में रहना एक बरकत है नहीं तो Corruption हो जायेगी। इसका भी कुछ Noble purpose है या नई School of thought (समाज) खड़ी करनी पड़ेगी। समझे। तो महापुरुष जब भी आये हैं, उन्होंने दोनों पहलू रखे हैं। मुसलमान भाईयों में शरीयत एक बाकायदगी है। शरीयत किसको कहते ? एक बाकायदगी, निज़ाम में चलना और कुछ मतलब नहीं। किसी ने एक कर्म किया, वही बहुत सारी समाज का कर्म, धर्म बना दिया। भई सुबह को रोज उठो। मुँह हाथ धोवो, नहाओ धोवो समझे। शरीर को पुष्ट रखो। रास्ता तो रास्ता ही है। रास्ता मन्जिल मकसूद नहीं, याद रखो। जिस पर चले हो मुबारिक हो। पहिला Elementary steps यह है कि आपने मैट्रिक पास करना है। उस हकीकत को पाने के लिये कहाँ जाना होगा ? किसी स्कूल में दाखिल होना पड़ेगा। हो गये तुम सब। अब जिसमें हुए हो वह जो असल रस्ता है, जो आज़ादी देने वाला है, वह तुम्हारे अन्तर है। वह इन्द्रियों के घाट पर नहीं। तो मैं यही अर्ज कर रहा था कि असल मजहब जो है वह आज़ादी बख्शने वाली चीज़ है। जो पहिला कदम हमने उठाया था, उसमें कट्टरपना, तास्सुब, तंगदिली में फंसना, हकीकत से दूर हो जाना है। पुजारी तो किसी बात के थे, बात कुछ बन गई। जिस ग़र्ज के लिये दाखल हुए थे, वह न हुआ। नतीजा, नफरत, एक दूसरे से बदज़नी (संशय) जब जब महापुरुष आते हैं, वह क्या नज़र देते हैं ? वह कहते हैं The way back to God is the way. इन्सान इन्सान सब एक हैं, All mankind is one.

मानस की जात सब एके पहिचानिबो ।

यह उनका उपदेश है। यह (समाजें) Different schools of thought (विभिन्न विचार धारायें) हैं। हम दाखल हुए हैं एक दूसरी जमायत में -

आई पन्थी सगल जमाती ।

हम जमात में पढ़ रहे हैं। हर एक जमायत में मुखतलिफ समाजों के आदमी होते हैं। किसलिये ? तालीम हासिल करने के लिये, उस रस्ते को पाने के लिए जो हमें हकीकत की तरफ का अनुभव कराये, इसलिये ! तो इसलिये हमेशा दो किसम के मजहब बने। एक मजलिसी मज़हब या जिसे कौमी मज़हब कहते हो, शख्सी (व्यक्तिगत) मज़हब कहो, मुल्को मज़हब कहो, यह तो एक बाहरी पहलू है। School of thought कहो, यह तो बाहरी है। यह तो किसी न किसी स्कूल में दाखल होना है। नहीं तो नई बनाओगे। इनके बदले की जरूरत नहीं, न तोड़ने की जरूरत है, न नये बनाने की जरूरत है। यह पहलू मैट्रिक क्लास है। दूसरा है, नूरी मज़हब, रूहानी मज़हब जिसे सन्तों का मत कहा जाता है। सन्त मत कहो या मज़हबे फुकरा कहो, वह सबका एक है। वह न किसी को तोड़ता है, न नया बनाता है। यह सर्व मत रक्षक है कहो। यह (बाहर का मज़हब) Outer man का मज़हब बना। Inner man जो है उसका एक ही रास्ता है - Inner way up is only one. वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर है। वहां पर सब एक है। सब भाई आत्मा देहधारी हो ना ! आत्मा चेतन स्वरूप है इसकी क्या जात है ? जब जिस्म के लेबल उतरेंगे, ऊपर आओगे, तुम्हारी क्या जात रह जाएगी ? आप बताईये ! इस नज़र से, आत्मा के Level (दृष्टिकोण) से महापुरुष देखते हैं। इसलिये ऐसे महापुरुष की पहली निशानी क्या है ?

सत्गुरु ऐसा जानिये, जो सबसे लये मिलाई जियो ।

पहिला काम। वह यह नहीं कहता, ऐ हिन्दुओं सुनो, ऐ मुसलमानों सुनो, ऐ सिखों, ऐ ईसाईयों सुनो। वह कहते हैं - ऐ इन्सानों सुनो, ऐ आत्मा देहधारियों सुनो ।

ऐ सूरत तू सुन री तेरा पिया बसे आकाश ।

समझे !

सुरत तू जाग री ।

सुरत, आत्मा को Address (सम्बोधन) करते हैं। तुम सब आत्मा-देहधारी हो, किसी भी लेबल को लगाये बैठे हो। सब मुबारक हैं। तो लेबलों का कसूर नहीं, जिस गर्ज के लिये लेबल लगाये थे, उस गर्ज को भूल जाने का कसूर है। सच्ची बात। तो इस नजर से महापुरुष देखते हैं। समाजों के बदलने से काम नहीं बनेगा भई। रहो किसी न किसी समाज में। हर एक समाज में ऐसे महापुरुष आये हैं भई जिन्होंने हकीकत को पाया, The way back to God. जितनी-जितनी उनकी रसाई हुई उतना-उतना बयान कर गये। हम, फर्ज करो अभी पहिली

भी पढ़े नहीं, एक एफ.ए. में पढ़ता है, उसके लिये इज्जत है कि नहीं। बी.ए. है, एम. ए. है, पी.एच.डी. है और डॉक्टर ऑफ लिटरेचर हैं जो, उनके लिए दिल में इज्जत होगी कि नहीं ? तो इसी तरह समाजों के बदलने का नहीं, यह तो जिसम के लेबल बदलने का सवाल है। इसमें जरूरत क्या रही। अभी मैंने अर्ज किया था कि The way back to God is one (प्रभु के घर जाने का रस्ता एक है) वह सबका जीवन आधार है। कोई ऐसी जगह नहीं, जहां वह नहीं है। सवाल आँख के बनने का है कि कैसे हमारी वह आंख बने जिससे वह नजर आता है और उसके नजर आने में हमारे रस्ते में क्या-क्या रुकावट है। इस बात को समझना है। सारी समाजें मुबारिक हैं, किसी समाज में रहना एक बरकत है। नहीं रहोगे तो Corruption हो जायेगी।

पहिला कदम उठाया है, मुबारक है। मगर जिस ग़र्ज के लिये उठाया है, उसको पाने का यत्न करो। उसके लिए क्या चाहिये ? यह चीज है कहां ? सवाल यह है। सब महापुरुष कहते हैं, कि अल्लाह शाहरग से नजदीक है। वह हमारी आत्मा की आत्मा है। वह हमारा जीवन आधार है। देखिये हमारी आत्मा जिसम में कायम है। दो आंखों के रस्ते हैं, सूराख, दो नासिका के, दो कान, मुंह, गुदा और इन्द्री। इनसे रूह बाहर निकल जानी चाहिये मगर निकल नहीं सकती है। एक को दस गोलियां लगती है, तब भी नहीं मरता। कोई चीज Control कर रही है। जो कन्टरोल कर रही है इस जिसम के अन्तर, वह है हकीकत, वह Controlling power जो है।

नानक नावें के सब किछ बस है।

वह कन्ट्रोलिंग पावर है।

पूरे भाग कोई पाय ।

बड़े पूरण भाग हों, तब इसको जाने। एक चिमटा है, उससे एक चीज पकड़ी हुई है। अब पकड़ने वाला, जो चिमटे को लिये, पकड़े हुए हैं, वह चीज, जो पकड़ी हुई है, वह उसको कैसे जान सकती है ? यही उपनिषद कहता है। तो इसके लिए, उसके अनुभव पाने के लिए क्या करना होगा ? इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना पड़ेगा। यह चीज, हकीकत तुम में है। सब महापुरुष यह कहते हैं ?

है घट में सूझत नहीं लानत ऐसी जिन्द ।

मैंने अब बाहर का जिकर छोड़ दिया। यहां कोई समाज नहीं, मैंने उसकी कीमत आपके

सामने रख दी। किसी के तोड़ने की जरूरत नहीं। किसी, नये समाज को बनाने की जरूरत नहीं। जो Real way back to God हैं, सन्तमत कहो, सन्तों की तालीम कहो, मज़हबे फुकरा कहो, वह आज़ादी देने वाला है। किसी समाज में रहो, क्या करना होगा ? जिसने उस हकीकत को पाया है, उसकी सोहबत करो भई। उसका नाम कुछ रख लो।

जो तू घट में चालन हार ।

अगर तू अपने घट में, यह घट में सफ़र करना है। है घट में, हमारे घट में है। हमारी आत्मा की आत्मा है, आधार है। अगर तू घट में अपने सफ़र करना चाहता है तो उस रस्ते में जाने वाले की सोहबत करो। बड़ी मोटी बात। स्वामीजी महाराज ने फर्माया। कबीर साहब कहते हैं -

या जग अन्धा

स्वामीजी भी यही कहते हैं। फर्माते हैं, कि सारा जहान ही, सब जग अन्धा है, घट का रस्ता नहीं मिला। वह, बाहर का रस्ता तो मिला, इन्द्रियों के घाट पर काम कर रहे हैं। एक पहलू के हम बड़े माहिर हैं। जिसके आधार पर यह बाहरी सिलसिला चल रहा है, उसका पता नहीं। न अपने आपका पता है। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं,पहिली जरूरत किस बात की होगी ?

चलने वाला संग ले यार ।

जो उस तरफ जाने वाला है, उसकी सोहबत करो। अब देखिये, बाहरमुखी साधन करने वाले आपको बाहरमुखी साधन बतलायेंगे। यह अपराविद्या है, पहिला कदम है, जो आपने उठाया है। यह Preparation of the ground (ज़मीन की तैयारी) है। इसमें क्या है ? ग्रन्थों, पोथियों का पढ़ना ठीक, महापुरुषों ने जिन्होंने देखा और पाया है उनके कलाम हैं। उनको समझो, जो उस रस्ते जाने वाले हैं, उनके पास बैठ कर। आपको Right import (सही मायने) मिलेगा। नहीं तो Intellectual level (मन बुद्धि के घाट पर) कई तफ़्सीरें (व्याख्याऐं) कर डालोगे, मगर हकीकत का निशान नहीं मिलेगा। Proof नहीं मिलेगा। तो इसलिये जरूरत किस बात की है, कि जो उस तरफ जाने वाला है, उसको साथ ले लो। उसका नतीजा क्या होगा ? कि यहां देखो, परखो। कैसे ? तो कहते हैं -

रूप रंग उसका मत देखो ।

उसने टोपी पहनी है या पगड़ी बाँधी है, या त्यागी है, या कुछ और है। जिसम का लेबल कोई लगाया है, उसकी तरफ मत देखो। क्या देखो ?

श्रद्धा भाव निशां देखो।

श्रद्धा भाव। देखो उस रस्ते जाने वाला है, किसी समाज का हो। देखो हरेक समाज में महापुरुष आये हैं। किस समाज में नहीं आये ? ब्राह्मणों में तुलसी साहब आये। पुराने ऋषि, पुरातन ऋषि मुनि जो आये, जो पाया है बयान किया। मुसलमान फ़कीरो में आये हैं। मौलाना रूम, शम्स तबरेज़ और सिख गुरु साहिबों में आये हैं और कई महापुरुष हर एक समाज में आये। कबीर साहब जुलाहे थे, नामदेव छीम्बे थे। अरे भई, समाजों के लेबलों को मत देखो। देखो, वह जाने वाला है अन्तर ? और तुमको ले जा सकता है कि नहीं ? कुछ Inner way up (अन्तर का रस्ता) दे सकता है कि नहीं ? उस रस्ते पर तुमको डाल सकता है कि नहीं ? सवाल तो यह है। पहिली निशानी है। तो आखर उसका -

जिसको है मालिक का प्यार ।

उसका क्या नतीजा होगा ? जिसको मालिक प्यारा है -

उसका हिन्दू और तुर्क दोनों यार ।

लेबलों की तरफ उसकी नजर नहीं जायेगी। उसका परमात्मा से प्यार है। आत्मा उसकी अंश है।

कहो कबीर एह राम की अंश ।

यह अमरे रब्बी है, रूह। उसका सबसे प्यार है। मेरा आपसे प्यार है, आपके बच्चों से प्यार होगा, जरूर होगा। यहां कोई East (पूर्व) और West (पश्चिम) का सवाल नहीं। North (उत्तर) South (दक्षिण) का सवाल नहीं। हिन्दू और मुस्लिम, सिख, ईसाई या मज़हबों का सवाल नहीं। As a man problem (सबके सामने एक ही समस्या) है, यह सन्तों का नजरिया रहा हमेशा। समझे ! तो इसको यही नहीं कहते, और भी सब महापुरुष यही कहते हैं -

मरदे हज्जी मरदे हाजी रा तलब ।
ख्वाह हिन्दू , ख्वाह तुर्को , ख्वाह अरब ।।

मौलाना रूम साहब कहते हैं - तुम प्रभु के देश की यात्रा करना चाहते हो तो किसी हाजी को साथ ले लो जिसने हज्ज किया है। समझे ! कौन हो ? कहते हैं, हिन्दू हो, तुर्क हो या अरबी हो, कोई बात नहीं। किसी मुल्क का हो, Inner way को पाया है जिसने, जो जाता है, वह उस रस्ते से वाकिफ है, तुमको ले जा सकता है। उस रस्ते पर डाल सकता है। कुछ पून्जी दे सकता है। उसकी सोहबत करो। कहते हैं क्या करो फिर ?

मनगिर अन्दर न चो अन्दर रंगे ऊ ।

उसके बाहिरी नक्शो निगार (नाक नक्शे) को न देखो कि क्या लेबल लगाया है।

उसका इरादा क्या है ?.. किस तरफ को जाता है ? क्या तालीम देता है ? क्या वह अन्दर के राज (भेद) का वाकिफ़ है ? तुमको ले जा सकता है ? तो ऐसे सारे महापुरुष यह कहते हैं ?

तुलसी साहब से सवाल किया गया कि महाराज ऐसे महापुरुष को कहाँ ढूंढे ? तो फर्माया-

उत्तम और चण्डाल घर एक दीपक उजियार

उत्तम हो या चाण्डाल हो, Lowest class का हो या Highest class का हो जिसके घर दीवा जलेगा परवाने वहां जायेंगे। समझे ! इसलिये -

तुलसी मते पतंग के सभी ज्योति इक सार ।

पतंगा यह नहीं देखता कि ज्योति कहां जगी है ? कसाई के घर जगी है या लोहार के घर या चमार के घर या जुलाहे के घर जगी है। पर्वाना तो वहां जायेगा। अरे भाई जो हकीकत-शनास हैं, हकीकत के मुतलाशी हैं, वह तो वहां जायेगें जहां पर हकीकत मिलेगी। यह Inner way हैं। अन्तर का रास्ता है। जो इस रस्ते के जाने वाले हैं उसके पास बैठ कर ही मिलेगा। यह पहला नज़रिया है। सारे महापुरुषों ने कहा है, एक जागता पुरुष है तुमको भी जगा देगा। जो मन-इन्द्रियों के घाट पर सो रहे हैं, बाहिरमुखी फैलाव में हैं, वह तुमको कैसे जगा सकते हैं ?

तो दुनियां में तीन रास्ते हैं। गौर से समझिये। पहिला रस्ता अन्धेरे का है। वहां पर कीड़े-मकोड़े, कई जहरीले जानवर रहते हैं। उनके निकलने के लिये कोई जगह नहीं। वहीं मर जाते हैं। दुनिया में ऐसे लोग बहुत हैं जो इन्द्रियों के घाट पर ऐशो-इशरत (भोग विलास) में बड़े मरते हैं। उनको पता ही नहीं आगे क्या है और पीछे क्या होगा । उसी में पच-पच कर मर जाते हैं। कभी होश ही नहीं। दूसरा है प्रेय मार्ग, बड़ा प्यारा मार्ग है प्रेय मार्ग, बड़ा अच्छा, ऐशो-इशरत का सामान है। थोड़ी थोड़ी झलक मालूम होती है रोशनी की, मगर अन्धेरे से मिली जुली है। वह Diiferentiate नहीं कर सकता है कि यह रस्ता है। हर एक, आप लोगों को मिला है। एक तो Stark blind (बिलकुल अंधेरे में) हैं, जो मैंने पहिले अर्ज किया। दूसरा जो Mid way (बीच में है) झलक आती है, कभी धक्का लगता है। हाँ कुछ और होना चाहिए, फिर वही ऐशो-इशरत, इन्द्रियों के भोगो रसों में लम्पट हो जाते हैं। इसको कहा, प्रेय

मार्ग, बड़ा प्यारा मार्ग है। इस मार्ग में रह कर नतीजा क्या होता है ? इन्सान धक्के खाते रहते हैं। कभी इधर धक्का खाया, कभी उधर खाया, दुःखी हो गये। हाय कुछ और होना चाहिये। न दुःखी हुआ तो ठीक है। आखर अन्त समय आता है, जिसम छोड़ना पड़ता है घबराता है, यह प्रेय मार्ग है। बहुत लोग इस रस्ते पर जाते हैं। सब दुनियां चल रही है। एक थर्ड क्लास तो है। मैंने पहिले अर्ज किया, उनको तो जरूरत ही नहीं। अगर उनको कहा जाये कि भई परमात्मा कोई चीज है, कहते हैं जैसे बिच्छू लड़ जाता है ना, बिच्छू डंक मारे ऐसे मालूम होता है। जाओ भई। दूसरी क्लास, मिडल क्लास, प्रेय मार्ग कहो, बाहर का मार्ग है। तो तीसरा एक और रस्ता है जिसको श्रेय मार्ग कहते हैं। यह शुरू में तंग और तार है। अन्धेरे से शुरू होता है। जब खुलता है, तो खुलता ही चले जाता है। इसमें थोड़े पहिले संयम की जरूरत है। थोड़ी Perseverence सब्र की, इस्तकलाल की। ''धीरज सुनयार,'' धीरज की जरूरत है, थोड़ा Way up कोई महात्मा कर दे, रोज Develop करो, बढ़ाओ फिर रोज-रोज Traverse (तय) करोगे। इस Mystery of life (जिन्दगी के भेद) को पहिचान जाओगे कि इन्सान क्या है । यह एक बड़ा Wonderfull house that we are living in यह अजीबो गरीब मकान है, जिसमें हम रह रहे हैं इसमें तुम बस रहे हो। इसमें खण्ड और ब्रह्मण्ड बस रहे हैं। Macrocosm is in the microcosm.

जो ब्रह्मण्डे सो ही पिण्ढे जो खोजे सो पावे ।

उसी के मुताबिक तुम्हारा जिसम है। स्थूल, सूक्ष्म और कारण Physical, astral, mental कहो, कारण कहो, इसके मुताबिक हमें जिसम मिले हैं। जब चाहें यहां काम करें, जब चाहें वहां काम करें। मगर हमारी यह (स्थूल शरीर) की दुकान खुली पड़ी है, और अन्तर का पता ही नहीं। महापुरुष जब इस रस्ते में जाने वाले आते हैं, उनका रस्ता इस पिण्ड से ऊपर शुरू होता है। Where the world's philosophies end there religion starts. जहाँ दुनिया के फिलसफ़े खत्म हो जाते हैं वहाँ परमार्थ की सही मायनों में उसकी क, ख शुरू होती है।

तो Inner way up कहां से शुरू होता है ? Kingdom of God cannot be had by observation. याद रखो बाहर फैलाव से नहीं मिलेगी चीज, आपको बाहर फैलाव से हटने में Invert होने में, Rise above (इन्द्रियों से ऊपर आने) करने में मिलेगी और वह आपके अन्तर है। तो यही ख्याल, इन्होंने ही नहीं कहा और और महापुरुषों ने भी बयान किया।

क्राईस्ट ने कहा, Wide is the gate, broad is the way बड़ा रस्ता खुला है, बड़ा रस्ता कुशादा (खुला) है जिसमें, क्या होता है ? That leadeth to thy destruction. जो तुम्हारी बर्बादी का कारण बनता है। वह प्रेय मार्ग है। उन्होंने उन लफ्जों में बयान कर दिया। अरे भई, हमारे दिल में उनके लिये क्यों न इज्जत हो! बयान तो किया है कि नहीं ! कहते हैं, Wide is the gate. बड़ा दर्वाजा खुला है, उसका Result (परिणाम) क्या है ? That leadeth to destruction. And many be that go in there. बहुत लोग इसी रस्ते, खुले रस्ते पर हैं। पानी बह रहा हो ना, उसके साथ बहना बड़ा आसान है। फैलाव में दुनिया जा रही है ! बिरह से निकलता है, ब्रह्म जो बढ़ रहा है जो फैलाव में जा रहा है। अरे जो फैलाव का मार्ग है ना, वह बड़ा आसान है। सब कोई आसानी से मानते हैं। जो फैलाव से परे मार्ग है, उसका भी जिकर क्राईस्ट ने किया। वह कहते हैं, Because strait is the gate. Strait कहते हैं तंग को, Strait is the gate and narrow the way. और बड़ा तंग रस्ता है। आपको पता है, यहां जिस्म से हटना पड़ता है, ऊपर चढ़ना पड़ता है। इसका नतीजा क्या होता है ? Which leadeth thee unto life जो हमेशा की जिन्दगी देने वाला है, मगर उसका पता मुश्किल से मिलता है - And few there be that find it. बड़े थोड़े लोग हैं जो इस रस्ते को पाते हैं। यह कहां है? तुम्हारे अन्तर है। If thine eye be single thy whole body shall be full of light. अगर तुम्हारी एक आँख बन जाये, काम बन जाये। अन्दर उसकी (प्रभु की) ज्योति का विकास हो जाये। यही तुलसी साहब ने फरमाया-

पुतली में तिल है तिल में भरा राज-कुल का कुल।
इस परदाये स्याह के जरा पार देखना ॥

इस स्याह परदे को कैसे Penetrate (पार) कर सकते हो ? यही एक सवाल है। जो लोग इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, वह इस बात से बेबहरा (बेखबर) हैं। जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाने वाले हैं, Penetrate करते हैं, वह कहते हैं, अन्धेरे में देखो। हम लोग क्या करते हैं ? हम बाहर ज्योति का विकास करते हैं ? Candles (मोमबत्ती) जगा ली, सूरज का ध्यान कर लिया। अपनी तरफ से Light का Visualise करते हैं। भई गधे का ध्यान करो गधा, घोड़े का ध्यान करो, घोड़ा- It is your own make यह तो तुम्हारा बनाया है। महात्मा कहते हैं - ''इस परदाये स्याह के जरा पार देखना''। Penetration से पार देखने से Inversion (अन्तर्मुख होने से) Light आ गई। वह तो आगे ही है - It is there you have not to produce or create. सारे महापुरुष यही कहते हैं, If ye shut the

doors of the temple of the body you will see the light of heaven. कहते हैं कि अगर तुम इस जिसम के दरवाजों को बन्द कर लो तो तुम परमात्मा की ज्योति को देखने वाले हो जाओगे।

अब मुश्किल क्या है ? सवाल यह आता है। चीज़ तो हम में है। बहुत दुनिया तो क्या है, आप देखिए लोग सिर्फ पढ़ी-पढ़ाई बातों को सुन-सुन कर खुश हो जाते हैं। मुश्किल क्या है? इस घट में - यह समुन्दर है। ''घट समुन्दर लख न पड़े'' फिर ! ''उठें लहर अपार'' इसमें लहरें उठ रही है।

दिल दरिया समरथ बिन कौन लघांवे पार ।

जो मन की वृत्ति को जानता है, जिसने मन को जाना है। कुरान शरीफ में आता है ''अर बहू नफ्सहू'' जिसने अपने नफ्स या मन को पहिचान लिया, उसने प्रभु को पहिचान लिया। तो मन का पहिचानना बड़ा मुश्किल है। बड़े-बड़े ऋषि मुनि, महात्मा इसके हाथों रोते चले गये। हम हर रोज रो रहे हैं।

यह, Way up (अन्तर का मार्ग) कहां मिलता है ? जब आप मन को स्थिर करो। तो मन के चार Phases (पहलू) हैं। चित, मन, बुद्धि और अहंकार। चितवन का होना, उसका मनन और Differentiation और Assertion यह सब मन के Phases हैं। जितने साधन हम कर रहे हैं सबका इन्हीं से ताल्लुक है। ठन्डे दिल से विचारो। अभी आप सुन रहे थे कि एक फ़कीर ने कहा कि हमारे और उस प्रभु के दर्मियान में अगर कोई रूकावट है तो मन की है। हम पक्का इरादा रखते हैं उसको पाने के लिए तो-

यक कदम बर नफ्से खुद ने दौगरे दर कूए दोस्त ।

एक कदम अपने नफ्स पर रखो और दूसरा कदम जो आप उठाओगे प्रभु की गली में पहुंच जायेगा।

मन जीते जग जीत।

तो मन को काबू करने का सवाल है। यह कहाँ शुरू होता है ? यह कैसा रस्ता है ? ''अगम पन्थ'' अगम पन्थ है, जो पन्थ असल मायनों में Way back to God है, अगम है। ''मन थिर कर'' मन को स्थिर करना पड़ेगा। और उसके साथ क्या करना पड़ेगा ? ''बुद्धि करे प्रवेश'' बुद्धि से Differentiation या यह कहो विवेक से काम लेना। फिर बुद्धि को भी स्थिर कर दो। अगर यह सब कुछ कर दें -

तन मन सब ही छाँडे ।

इससे ऊपर आ जाये तो क्या होगा ?

तब पहुंचे गुरु के देश ।

तब उस देश को जा सकता है जहां गुरु ले जाना चाहता है। तो उसको पाने के लिये क्या करना होगा ? ''इन्द्रियां दमन हों, मन खड़ा हो और बुद्धि भी स्थिर हो, तब आत्मा का साक्षात्कार होता है।'' Kingdom of God cannot be had by observation. समझे मेरी बात ! प्रेय मार्ग से नहीं, श्रेय मार्ग से। मगर इस राज (भेद) के वाकिफ बहुत कम लोग हैं।

चित्त दीपक सम होय रहो तज विवाद ।

झगड़ा पाक ! बुद्धि को स्थिर कर लो। एक बात को समझ लो, Reasoning is the help and reasoning the bar. एक बात को समझने के लिये तो इससे काम लो। जब समझ आ गई तो झगड़े छोड़ दो। वह जो समझ आई है, उसको पाओ। उसके लिये समता भाव चाहिये, टिकाव, The very silence becomes vocal. तो इसे चुपचाप, Deeper silence कहो, इसमें जाना होगा। कब ? जब बाहर से हटोगे। यह मुश्किल है। बीच में यह मन समझिये। हम लोग क्या करते हैं ? महापुरुषों की कहानियां पढ़ते हैं। उनके कलाम पढ़ते हैं। सिर मारते हैं, वाह ! वाह ! बड़ा आला है। जितना आलिम (विद्वान) हो गया समझे उतना रूहानी (आत्मज्ञानी) बन गया। अरे भई रूहानी नहीं बने वह।

जन्ज पराई एहमक नच्चे ।

बच्चे होते हैं ना, बरात जाती है तो बच्चे आगे नाच करते हैं। अरे भई बरात तो उसकी जा रही है, तुम क्या नाचते हो ! महापुरुषों ने कलाम पेश किये, उन्होंने हकीकत को पाया, उनकी आत्मा प्रभु से मिली, वह उसके गुणानुवाद गाते चले गये। पढ़ कर हमें शौक होना चाहिये। शौक को उपजाने के लिये, कि उसने पाया तो मुझे भी मिलना चाहिये। यह बात तो ठीक। मगर हमारी क्या हालत है ? मिसाल पन्जाबी की है, क्या, कि दो पैसे की शराब मुझे दे दो। वह मूंछों से लगा लूंगा। चढ़ानी मुझे आती है। कथा करने वाले, लेक्चर देने वाले, वाह, वाह, सिर मारने लग जाते हैं। दूसरे भी साथ मारने लग जाते हैं। अरे भई बताओ क्या मिला है कि नहीं ? आप यह बतायें कि आप बराती बनना चाहते हैं, या सचमुच तुम्हारी शादी होनी चाहिये, आत्मा की प्रभु से। बतायें। बराती तो बहुत हैं, मेरे ख्याल में हर कोई यही चाहता है कि मेरी आत्मा का प्रभु से विसाल हो, जिस तरह कि महापुरुषों का हुआ। इस चीज के

उपजाने के लिए हम दाखल हुए थे, महापुरुषों के चरणों में गये। इसलिये बराती बनने की ख्वाहिश है या आत्मा को प्रभु के साथ जोड़ने की ख्वाहिश है, यह बताओ। ग्रन्थ पोथियां हमारे पास मौजूद हैं। उनके पढ़ने से शौक बनता है, फलाने ने पाया है, फलाने ने पाया है। धन्ने जाट के मुतल्लिक आया कि उसने पाया तो ''उठ जाट भक्ति लागा।'' वह भी कहे मुझे भी मिलना चाहिये। अरे भई यह उत्साह तो ठीक। पढ़ने-पढ़ाने से अगर खाली उन्हीं के बराती बन कर नाचने का सवाल है तो भाई मनुष्य जीवन बर्बाद चला जायेगा। अब सवाल क्या रहा ? दो बातें रही हमारे सामने। पहिली बात, कि सुरत को परिपूर्ण परमात्मा, जिसको शब्द या नाम कहते हैं, सुरत शब्द योग कहो, उसके साथ अभ्यास कर के मन को निर्मल बनाना है। जब उसका रस मिलेगा तो इन्द्रियों के भोग रस हटेंगे कि नहीं ? उस परिपूर्ण परमात्मा की ज्योति का विकास या जो प्रणव की ध्वनि हो रही है, उसका Contact तब होगा जब बाहर से हिलोरें हटेंगी, जब बाहर के दर्वाजे बन्द हो जायेंगे।

गुरु दिखलाई मोरी। जित मृग पड़त है चोरी।

यह कहां से हम लूटे चले जाते हैं ? कहां से यह तरंगे उठती है मन की ? इस बात को समझ कर, उसका नतीजा क्या होगा ? चित्तवृत्ति का निरोध करते हुए, रूहानियत आ जाएगी।

योगस चित्त वृत्ति निरोधः ।

यह एक तरीका है। Direct contact का (आत्म परिचय) का सवाल है। आप समझे ! It is not a matter of feelings, emotions and inferences. नतीजा अख़ज करने (मन बुद्धि के घाट पर तर्क वितर्क से परिणाम निकालने) का काम नहीं, Feelings (भावना) नहीं कि वह (प्रभु) सारे में है। Hypothesis (असूल के तौर पर) यह ठीक है, वह सारे हैं। मगर वह (महापुरुष)देखते हैं, हम देखते नहीं, जब वह अन्तर में इन्द्रियों के घाट से ऊपर आता है, वह देखता है, तो बाहर भी वह देखता है। हम सिर्फ पढ़े-पढ़ाये पर ही बात करते हैं। वही बात, बराती बनने का सवाल आ गया। कितने लोग हैं, जो देखने वाले हैं। समझे ! कितने लोग हैं, जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर जा सकते हैं, जाते हैं। मुझे ऋषिकेश में एक हस्ती मिली सिर्फ जो पिण्ड से ऊपर जाता था, पतन्जली योग करके। अरे भई किसी रस्ते जाओ। योग का भी तरीका है। कई तरीके हैं। वह मुश्किल है, Time consuming हैं वह। हर कोई नहीं कर सकता। जो Inner way up है, Natural है, कुदरती है, वह बच्चा, बूढ़ा, जवान, सब कोई कर सकता है। एक तो यह रस्ता है। दूसरा विचार शक्ति को बढ़ा कर, ज्ञान मार्ग का मैं जिक्र कर रहा हूं। अब विचार शक्ति को बढ़ा कर, विचार योग के साधन से, सार

वस्तु समझने की कोशिश में लगो ताकि अनुभव बढ़ सके। मगर यह बड़ा मुश्किल है। लाखों में कोई एक कर सकता है और ज्ञान हम क्या समझते हैं ? हम तो यही समझते हैं कि पढ़ने-लिखने, अकलमन्दी को, बुद्धि के विचारों को ही ज्ञान समझते हैं। यह ज्ञान नहीं है। ज्ञान की यह तारीफ़, इन्द्रियों का ज्ञान या इन्द्रियों के द्वारा जो ज्ञान मिलता है, इसको हम ज्ञान कहते हैं। अरे भई यह ज्ञान नहीं है। एक प्रमाण होता है, एक अनुमान होता है, एक अनुभव होता है। तो अनुभव का सवाल सबसे ऊंचा है। बाहरी कितने Facts (प्रमाण) महापुरुषों के, सब दुनिया की धर्म पुस्तकें दिमाग में भर गई, पेश करते चले जाओ। बताओ तुम्हें क्या मिला ? तुम्हारी आत्मा को सुहाग मिला है कि नहीं ? सवाल तो यह है कि केवल बराती ही बने हुए बैठे हो ! तो यह है दूसरा मार्ग, है जो मुश्किल और ज्ञान की उपनिषदों में तारीफ़ की है कि ज्ञान किस को कहते हैं । जिससे सब कुछ जाना जाता है उसे क्या कोई जानेगा, और कैसे जान सकता है ? मैंने अभी मिसाल दी थी न, एक चिमटे की। आगे एक चीज पकड़ी हुई है, पकड़ने वाले का हाथ जो चीज पकड़ी है वह कैसे जान सकती है ? उसका अनुभव तभी जागेगा जब आप उस Level (स्तर) पर जाओगे।

एवड ऊचा होवे को । तिस ऊचे को जाने सो ॥

अब मन जो है ना, मन में सबकी -

'' उठें लहर अपार'' ।

अब यह तरंगे कहाँ से उठती हैं, इस बात को समझना है। चित्त वृत्ति का जब निरोध होगा, Stillness होगी, तब Divinity dawn करेगी (आध्यात्मिकता का विकास होगा) यह कह दो। तो इसलिये महापुरुषों ने कहा कि -

चशम बन्दो, गोश बन्दो, लब बे बन्द ।
गर न बीनी सिर्रे हक़ बर मन बिखन्द ॥

आंखों को बन्द कर लो, कानों को बन्द कर लो और जबान को बन्द कर लो। इन्द्रियां हैं पांच, यह तीन इन्द्रियां बड़ी प्रबल हैं। दो और भी हैं। नासिका की और स्पर्श की, चमड़े की, मगर यह तीन इन्द्रियां, कहते हैं अगर तुम बन्द कर लो, बाहर जाने वाली प्रवृत्तियों को अन्तर्मुख कर लो, Outgoing faculties invert (उलट) कर लो। Control कर लो, कहते हैं फिर अगर तुमको हकीकत का जल्वा न मिले तो मुझ पर हंसी करना। अब आप देखेंगे - यही और महापुरुषों ने कहा। गुरु नानक साहब फर्माते हैं -

तीन बन्द लगाय कर सुन अनहद टनकोर ।
नानक सुन्न समाध में नहीं साँझ नहीं भोर ॥

वहां न day है न Night है। अपने आपमें एक नई दुनिया है जहां तुम पहुंच सकते हो। अन्तर में वह आकाशबाणी कहो, अनहद की ध्वनि कहो, श्रुति मार्ग कहो, अन्तर दो ही रस्ते हैं। एक ज्योति मार्ग है, एक श्रुति मार्ग । यह कहां से शुरु होता है ? जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ। जितने बाहरमुखी अपराविद्या के साधन हैं, यह पहिला कदम है। यह Preparation of the ground है, शौक दिलाने के लिये। जैसे मैंने अभी मिसाल दी, बराती जा रहा है, दूल्हा जा रहा है दुल्हिन के लिये, बराती जा रहे हैं साथ। अरे भई बराती न बनो। दूल्हे बनो। अपनी आत्मा को प्रभु से जोड़ो, तब तो तुम्हारा सुहाग अटल है। यह सदा का सुहाग है, जो कभी टल नहीं सकता है।

मीराबाई सदा सुहागिन, वर पाया अविनाशी ।

मीराबाई को सदा का सुहाग मिल गया क्योंकि उसको वह वर मिला है जो नाश से रहित है। समझे ! यह कैसे मिलता है ? फिर वही सवाल है -

चारे कुंटाँ जे भवे, बिन सतगुरु सुहाग न पाई राम ।

यह सुहाग चारो कुंटों में भटकते फिरो, जब तक कोई सुहागवन्ती आत्मा नहीं मिलेगी, तुमको नहीं मिलेगा। है तुम्हारे अन्तर, ग्रन्थों पोथियों में उसका जिक्र है। तो महापुरुषों ने इस बात को बहुत खोल खोल कर बयान किया है। अब तीन इन्द्रियों का सवाल आता है। मन एक तालाब की तरह समझिये। यह तीन इन्द्रिये, बाहर से एक नाली है, जिससे हवा अन्तर आ रही है, वह जो संस्कार इन इन्द्रियों के रस्ते आते हैं, उसमें बुलबले पैदा करते हैं, लहरें पैदा करते हैं, वृत्तियां जिसको कहते हैं अब वृत्तियां बन्द हो। ''चित्त वृत्ति निरोधः'' तब हकीकत आश्कार होगी। जब से हम पैदा हुए, कहने वाले तो बहुत मिलते हैं -

चलो चलो सब कोई कहे बिरला पहुंचे को ।

कहने वाले सब हैं। चलो भई, चलो भई, यह रस्ता है चलो भई। कोई कोई पहुंचता है। तो भगवान कृष्णजी ने क्या कहा है ? हजारों में कोई एक मेरी तरफ चलता है, ऐसे हजारों चले हुओ में से एक मुझे पहुंचता है। कहां रह जाते हैं ? यही इस मन के थपेड़ों में डूब मरते हैं। समझे ! और यह बात सच है। एक फकीर कहते हैं -

दर कारे दरिया तख़ता बन्दम करदई ।
बाज़ में गई कि दामन तरमकुन हुशियार बाश ॥

अरे भई इन्द्रियों के घाट पर बिठाया है, कहते हैं, खबरदार ! इनके असर से बच जाओ।

मुश्किल है और महापुरुष यह बतलाते हैं कैसे तुम इन्द्रियों के घाट पर रहते हुए, तुम इससे ऊपर जा सकते हो। तुम देखते हुए न देखो, सुनते हुए न सुनो। समझे ! उसके पसे-पुश्त (पीछे) कौन सी चीज है ? एक छटी चीज है, पांच इन्द्रियों के पीछे। वह तुम्हारी आत्मा है, सुरत। सुरत इन्द्रियों के साथ लगेगी, कान के साथ लगेगी तो सुन सकोगे। सुरत कहीं और लगी है तो कान खुले हुए भी नहीं सुनोगे। सुरत आँख की इन्द्री के साथ लगेगी तो देख सकोगे। कहीं और मेहव है, आंखे खुली हैं पहचानते नहीं कौन आया। क्यों साहब ठीक है कि नहीं ? इस चीज का हमें पता नहीं रहा।

सन्तों का मार्ग सुरत का मार्ग है। अब आप समझे ! सुरत पर Control करो। यह सुरत शब्द योग है। यह सब इन्द्रियों को आधार देने वाली चीज़ है। तो इस सुरत को हमने कन्ट्रोल (काबू) करना है। कौन सी रुकावटे हमारे रस्ते में आती है ? अब आप ठन्डे दिल से विचारिये।

चलो चलो सब कोई कहे बिरला पहुंचे को ।

कौन सी रस्ते में रुकावटे हैं ? कहां मारे जाते हैं लोग ? कनक और कामिनी में -

एक कनक और कामिनी दुर्गम घाटी दो ।

ज़र और ज़न, कन्चन और कामिनी Woman and gold. स्वामी विवेकानन्दजी अमरीका से वापस आये तो रामकृष्ण परमहंसजी ने कहा, What did you see there ? क्या देखा तुमने वहाँ ? कहा, Master all are worshipers of woman and gold. वहां ज़र और ज़न की पूजा हो रही है। अरे भई कहां नहीं हो रही है, यह बताईये। आप समझे ! अब क्या है ? हम आँखों के रस्ते क्या देखते हैं ? बड़े बड़े अडम्बर और All lascivious thoughts क्या सुनते हैं ? बड़ा आदमी लाख का बन गया, फलाना महाराज बन गया, फलाना मिनिस्टर बन गया, फलाने की Business इतनी सारी हो गई और या खाओ पियो और मजे करो, और इन्हीं का रस हम लेना चाहते हैं। यह दो दुर्गम घाटी हैं। मगर कोई कोई बिरला इससे बचता है। कोई ऐसा साधु न मिला जिसके संग लग कर तुम पार जा सको। तो यह है रुकावटे रस्ते में, इसको कन्ट्रोल करो। इसलिये सम और दम बनाया गया। कन्ट्रोल करो अपनी ख्वाहिशात को और फिर बगैर ख्वाहिशात के हो जाओ। Be desireless (कामनाविहीन हो) यह यम और नियम के साधन हैं। सब महापुरुषों ने यही बयान किया। तो जब तक यह थिरता (स्थिरता) कायम नहीं होती,काम नहीं बनता। तो इसलिये, नतीजा क्या होता है ? हम इनके बयान सुनते इनके देखने में आते हैं और इन्हीं चीजों का हमेशा जिकर करते रहते

हैं। नतीजा इन्हीं आलायशों (मैलों) में जो देखा, जो सुना आता है न, जो सुनता है वह बहक जाता है। जो देखता है, वह कहीं का नहीं रहता। जो बोला सो मारा गया। जो सुनता है बहक जाता है। चौबीस घन्टे यहीं संस्कार पड़ते रहते हैं। ज़र और ज़न, यही एक रुकावट है। इससे क्या करना होगा ? यह संस्कार कहां से आते हैं ? इन इन्द्रियों के रस्ते आते हैं। तो महापुरुष क्या कहते हैं ? कि भाई इन इन्द्रियों को, बाहर तो तुम देखते हो, संस्कार लेते हो। इन इन्द्रियों से जो संस्कार लेते हो उनको बन्द कर दो।

गुरु दिखलाई मोरी जित मृग पड़त है चोरी ।
मून्द लिखे दर्वाजे तां बाज लिये अनहद बाजे ।।

यह चीज आपके अन्दर मौजूद है। सिर्फ Inversion (अर्न्तमुख होने की) जरूरत है। कन्ट्रोल करना कहो, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना कहो, जीतेजी मरना कहो, Learn to die so that you may begin to live. अरे भई अन्तर में भी तो यह इन्द्रे काम करते हैं। बाहर से हटे, अरे भई मैट्रिक पास हो गये, कॉलिज में अब दाखिल हुए। कॉलिज में दाखिल हुए वहां भी तो अन्दर रूहानी नज़ारे आते हैं, अनहद की ध्वनियाँ सुनाई देती हैं जो जन्मों-जन्मों की सोई हुई रूह को जगा देते हैं। अन्तर महारस मिलता है। चखने को ! तो आप कहेंगे कि भाई बाहर से हटे, अन्तर में भी तो वही इन्द्रजाल रहा। अरे भई बाहर का इन्द्रजाल, मैट्रिक हो गये, कॉलिज में आये। अब इसमें महवियत होगी। याद रखो देखते-देखते,जल्वा देख कर, मैहवियत आयेगी। इन्द्रियाँ मैहवियत में तुमको ले जायेंगी, अन्तर की जब खुलेगी, राग सुन सुन कर, बाहर देखिए राग में कितनी मस्ती है। सांप जैसा जहरीला जानवर जब बीन की आवाज को सुनता है, तो क्या होता है नतीजा ? सिर रख देता है। अगर बाहरी आवाज से सांप जैसे जहरीले जानवर भी सिर रख देते हैं, अन्दरूनी आवाज में कितनी मस्ती होगी ? उसमें महवियत होती है। दो ही चीजों से मैहवियत है - अच्छा नज़ारा देख कर अचम्भा होता है, एक नई दुनिया में जाग उठता है। इन्सान या आवाज सुन कर मेहवियत में चला जाता है, इस महारस में इन्सान मस्त हो जाता है, मेहवियत में चला जाता है। यही इन्द्रियां तुम को Way back to God हैं।

तो अन्तर में ज्योति मार्ग और श्रुति मार्ग कहो, श्रेय मार्ग से शुरु होता है। कोई महापुरुष तुमको अगर बिठा कर इस Way (मार्ग) का पता, Way up कर दे, थोड़ा Experience (अनुभव) दे दे, फिर एक दिन में एम.ए. पास नहीं हो जाता। Time factor is necessary. वक्त लगता है, Day to day practice (रोज अभ्यास करते हुए) आप Experi-

ence (अनुभव) करेंगे जो और महापुरुषों ने किया है। Every saint has his past and every sinner a future. हर एक महापुरुष हमारी ही तरह कभी चल रहा था। वह पहुंच गया, हम अभी पहुंचे नहीं। हम उनके पास बैठते हैं, कि आप पहुंचे हैं, हमें मदद कर दो। बस। बात तो यही है। Son knows the father and others whom the son reveals. (पुत्र, पिता को जानता है या वह जानते हैं जिन्हें वह, उसका पुत्र, दिखाये) वह भी इन्सान है। आपकी तरह शक्ल इन्सानी रखता है। मगर उसने एक Development कर ली है। एक एम.ए. पास हो गया, वह तुमको एम.ए. में मदद कर सकता है। तालीम के हासिल करने में, एक डॉक्टर है, जिस्म की साईन्स में माहिर है,मगर वह भी इन्सान है। अरे भई एक महापुरुष है, वह भी इन्सान ही है। वह कहता है मैं इन्सान हूं।

जैसे में आवे खसम की बाणी, तैसड़ा करो ज्ञान वे लालो ।

He is mouthpeice of God. समझे ! इस बात का वह अनुभव रखता है, देखता है कि-

मेरा किया कछु न हो, जो हर भावे सो हो ।

यह फ़र्क मिलेगा आपको। अनुभवी पुरुष कभी नहीं कहता कि मैं करता हूं। मेरा गुरु करता है, परमात्मा करता है। मालिक करता है। वह देखता है, वह (प्रभु) कर रहा है। वह सच कहता है।

सुन सन्तन की साची साखी, सो बोले जो पेखे आखी ।

तो यह बात जो है, यह लिखा-लिखी है नहीं -

लिखा लिखी की नहीं, देखा देखी बात ।
दुल्हा दुल्हिन मिल गये, फीकी भई बरात ॥

झगड़ा पाक। आत्मा प्रभु से मिल गई। सब झगड़े पाक हो गये। अनुभव करने की चीज है। है आपमें, मगर श्रेय मार्ग से शुरु होता है। Strait is the gate, narrow is the way. मगर बड़े थोड़े लोग हैं जो इसे पा सकते हैं। अब कोई महापुरुष, इस रस्ते माहिर हो, वह तुमको इस रस्ते पर डाल दे तो इस तरफ जा कर तुम्हारी कल्याण होगी। तो यह था थोड़े लफ्जों में इन्द्रियों के घाट से क्या होता है बाहर हट कर। आपको पता है, कहां यह हरि मन्दिर है ?यह है यह (सिर का इशारा करके) गुम्बददार है। इसमें तुम Invert करते (अन्तर्मुख होते) हो। अन्तर दाखिल होना है। Body is the temple of God. यह (सिर) है ना, गुम्बददार शक्ल का ! जितने हैं मन्दिर, धर्म स्थान,सब गुम्बददार शक्ल के Dome-shaped. बनाये हैं कि नहीं ? या Forehead shaped (नाक की शक्ल के) हैं।

तो बाहर से हट कर अन्तर्मुख होना है। अब अन्तर्मुख होने के लिये क्या करना होगा ? जो अपने आप जा सकते हैं, Let them try and see. वह कोशिश करे। न जा सके तो बाहर के कामों में मदद किसी से लेते हैं कि नहीं ? यहां भी किसी अनुभवी पुरुष से मदद लेकर Way up हो (इन्द्रियों के घाट से ऊपर आओ) फिर आगे Guidance ले ले (आगे रस्ता ले ले) इन्सान, याद रखो, इन्सान के अन्तर नहीं जा सकता है, दाखल नहीं हो सकता है, हमारे हजूर फर्माया करते थे, वह God power जो तुमको यहां भी तालीम दे और वहां भी Guide कर सके, उसको पकड़ो।

बा तो बाशद दर मकानो लामकां , चू बिमानी अज़ सराओ अज़ दुकाँ ॥

जो तुम्हारे साथ रहे। बाहर भी पान्दे की तरह काम करे और जब तुम Inversion में जाओ, (अन्तर्मुख हो) वहां दिव्य रूप गुरु हो कर सामने आ जाये। Radiant form of the master जिसे कहते हैं। जिसमें वह समरथा है, उसका नाम है साधु, सन्त और महात्मा ! जाओ तलाश करो जहां से मिला है। तो यह मैंने थोड़ी सी चीज पेश की। अब आप कहेंगे शहादत (गवाही) क्या है ? तो इसके लिये आगे मुखतालिफ (विभिन्न) महात्माओं की बाणी ली जाती है। आज स्वामीजी (स्वामी शिवदयालसिंहजी) महाराज का एक छोटा सा शब्द है। मालूम तो बड़ा Abrupt होगा, मगर बड़ा सही To the point है। हरेक चीज की Value (कीमत) पेश की है। गौर से सुनिये, वह क्या फर्माते हैं -

खोज री पिया को निज घट में ।
जो तुम पिया से मिलना चाहो, तो भटको मत जग में ॥

स्वामीजी महाराज का शब्द है। फर्माते हैं, ऐ भाई, अगर तुम आत्मा का सच्चा पति परमात्मा जो है, जिससे मिलने से सदा का सुहाग है, उसको पाना चाहते हो, तो कहां जाओ? घट के भीतर, अन्दर में। बाहरमुखी नहीं। Kingdom of God cannot be had by observation. समझे ! बाहर से हटना पड़ेगा। सब महापुरुषों ने यही कहा -

है घट में सूझत नहीं लानत ऐसी जिन्द ।
तुलसी या संसार को भया मोतियाबिन्द ॥

दुनिया को मोतियाबिन्द हो रहा है। तुम्हारे अन्तर चीज है, उसका जिक्र ग्रन्थों-पोथियों में है। हमारे दिल में सब ग्रन्थों पोथियों के लिए इज्जत है। क्योंकि उसमें उनके बेश-बहा, कीमती अनमोल वचन है, जो अन्तर जाते हुए उन्होंने हमारी हिदायत के लिए छोड़े गए। तो फर्माते हैं कि ऐ भाई, हकीकत तुम में है। जिससे तुम्हारी आत्मा का विसाल (मिलाप) होना है, वह भी तुम्हारे अन्तर में है। जो चीज जहाँ है वहीं मिलेगी ।

वस्तु कहीं ढूंढे कहीं केहि बिधि आवे हाथ ।
कहे कबीर तब पाइये जो भेदी लीजे साथ ।।

इस राज (भेद) के वाकफ को साथ ले लो तो क्या होगा -

भेदी लीना साथ कर दीनी वस्तु लखाय ।
कोट जन्म का पन्थ था पल में पहुंचा जाय ।।

अगर राज़दार (भेदी) को आप साथ ले लोगे तो वह तुमको उससे Way up कर देगा। मनुष्य जीवन ही एक ऐसा जीवन है, Highest in creation, जिसमें तुम यह काम कर सकते हो और किसी जूनी में नहीं। तो कबीर साहब फर्माते हैं कि भाई दो बातें याद रखो मनुष्य जीवन भागो से मिला है।

यह दुनिया दिन चार धिहाड़े ।

यह बड़ी Golden opportunity (सुनहरी मौका) आपको मिली है। इसमें जल्दी से जल्दी यह काम कर लो। क्या करो ?

यह दुनिया दिन चार धिहाड़े, रहो अलख लौ लाई ।

इन्द्रियों के घाट से ऊपर अपनी लौ को लगाओ। बस। अगर मनुष्य जीवन पा कर इन्द्रियों से ऊपर जाना नसीब हो गया, आना जाना खत्म हो जाएगा। ज्योति मार्ग में रूह आ गई वह वापस नहीं आयेगी। जो कर्मकाण्ड में रहेगी जो बुद्धि के विचारों में रहेगी उसको आना जाना पड़ेगा। नरक स्वर्ग फिर फिर औतार।'' अलख अर्थात् अगर इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गये तो आना जाना खत्म, अगर इन्द्रियों के घाट ही पर रहे, नेक कर्म किए या बद किये, दोनों सूरतों में तुमको आना जाना पड़ेगा। बड़ी मोटी बात। कहते हैं, ऐ भाईयों, खोजते हो उसको तो अन्तर में खोजो, बाहरमुखी साधनों से नहीं मिलेगा। You can not pray God with with hands but with the spirit. तुम बाहर इन्द्रियों के घाट से उसकी पूजा नहीं कर सकते। आत्मा का विसाल होगा परमात्मा से। न वह इन्द्रियों से जाना जाता है, न मन से, न बुद्धि से, न प्राणों से। बड़ी साफ़गोई है। सुरत न पहिचानना है। जब सुरत, सुरत न बने, इस राज़ (भेद) को जानते नहीं, महान सुरत को कैसे जानोगे ? आत्मा ने अनुभव करना है ना! तो कहते हैं कि ''खोज री पिया की निज घट में।'' तुम्हारे घट में है। चीज जहां है वहीं ढूंढो। वह अदृष्ट, अगोचर है। अदृष्ट, अगोचर ही बनोगे तब उसके Level को पा कर उसको पा सकोगे और गवाही दे सकोगे। जब अन्तर की आँख खुलेगी, यह सारी दुनिया उसी का

इजहार मालूम होगा। कहते हैं, फिर क्या करो ? कहते हैं, ''खोज री पिया को निज घट में।'' जो तुम पिया से मिलना चाहो तो, ''भटको मत जग में।'' जग, जगत क्या है ? पीछे कभी नजर आता है जगत ? जगत वह हुआ जो सामने हमारे, इस जिसम में, इन्द्रिये, दर्वाजे लगे पड़े हैं। जिनके दर्वाजे बाहर खुले हैं, बाहर की Observation (झलक) हम लेते हैं। जो सामने नहीं, उस चीज़ का पता नहीं। तो जगत क्या है ? तुम्हारा इज़हार, बाहर फैलाव का, बाहरमुखी जितना भी तुम रहोगे, उतना ही दूरी में रहोगे। जितने फैलाव में जाओगे, प्रेय मार्ग में और फंसते चले जाओगे। बिरह (फैलाव) समझे ! Inversion में जाओ, Back, महापुरुष तुम्हारी अन्तर की खिड़की खोल देता है। अन्दर एक खिड़की है। जो बाहर दरवाजे जो खुले हैं, इनको बन्द कर देता है, अन्तर का रस्ता खोल देता है। आप आँख बन्द करते हो तो अन्धेरा नजर आता है कि नहीं ? कोई चीज अन्धेरे को देख रही है। वह क्या है? वह बन्द है। वह दिव्य-चक्षु है। उसी को खोलना है। जो महापुरुष तुम्हारी उस आंख को खोल सकता है, पून्जी कुछ दे सकता है, कुछ Capital दे सकता है, वह दया करे, अन्तर रस्ता दे दे तो तुम उसी गति को पा जाओगे जिसको उसने पाया है। अब आप समझे बात क्या थी ? तो कहते हैं जगत के -

साईं दा की पावणां, इधरों पटणां ते उधर लावणा ।

जिसके लिए दुनिया इतनी सरगरदान (परेशान) है। कोई बाहरमुखी साधनों में उलझा पड़ा है, कोई लेबलों (ठप्पों) के झगड़ों में फंसा पड़ा है।

हमारे हजूर फर्माते थे कि एक भेड़ों के रेवड़ को आग लग गई। किसी भाई को रहम आ गया। वह भेड़ को निकाल कर बचाना चाहता था, फिर वह उसी में जल कर मरना चाहती है। अरे भाई, मजहब बड़े Noble purpose (उच्च उद्देश्य) से बनाया गया है। जरूर रहो, मगर उस हकीकत को पाओ। वह केवल सुरत है, वह तुम्हारा अपना आप है। जब तक तुम सुरतवन्त नहीं बनते, महान सुरत को नहीं जान सकोगे। बड़ी मोटी बात। क्योंकि सुरत ही ने महान सुरत का अनुभव करना है,किसी समाज में तुम रहो। इसीलिये मैंने अर्ज किया जो सन्तों की तालीम है ना, वह सब मत की रक्षक है। किसी को तोड़ती नहीं, कोई बनाती नहीं।

हमारे हजूर (बाबा सावनसिंहजी महाराज) फर्माया करते थे कि कुऐं आगे ही बहुत लगे पड़े हैं, नया कुआं लगाने की क्या जरूरत है ? वह बनावट में नहीं, वह बिरह और फैलाव में नहीं, वह तो Inversion (अर्न्तमुख होने) से उनका रस्ता शुरू होता है। इस राज़ (भेद) का वाकफ़ जब तुमको कोई मिलेगा, तुम्हें पहले सुरतवन्त बनायेगा, महान सुरत के जानने वाले

हो जाओगे। तो कहते हैं, भई बाहर भटको नहीं। इससे मतलब यह नहीं कि कुछ नहीं करो। अरे भई जमीन की तैयारी के लिए ग्रन्थ-पोथियां पढ़ो। यह पहिला कदम है। समझे ! फलाने की बरात चढ़ी, फ़लाने को यह मिला, हमें भी शौक हुआ हमें भी मिले, इसलिये पढ़ो। समझो, तोते की तरह नहीं पढ़ो, समझो वह क्या कहते हैं ? पूजा-पाठ, यह वह,करने से थोड़ी देर भाव भक्ति बनेगी। जमीन की तैयारी हो गई, मगर बराती न बनो दूल्हे बनो, तब काम बनेगा। तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं थोड़े लफ्जों में, ''जो तुम पिया को मिलना चाहो तो मत भटको जग में।'' बस। दुनियां फैलाव में बह रही है और फैलाव में बहने वाला इंसान, जिधर पानी जाए उधर बड़ी आसानी से जाता है कोई तकलीफ नहीं। तकलीफ तो Inversion में है पहिले थोड़ी, मगर Broad is the way और बड़ा Wide is the gate. खुलता है तो खुलता ही चला जाता है। पिण्ड, अण्ड, ब्रह्मण्ड, पार-ब्रह्मण्ड, सच खण्ड तक जा सकता है। अब आप दो Differences (फर्क) देखे, बात क्या है, थोड़े लफ्जों में उन्होंने बयान किया, बड़ा Short-cut कर के, बड़ी मोटी बात -

जो तुम पिया से मिलना चाहो, तो भटको मत जग में ।

बड़ी मोटी बात। अब बाहर चीजों की कीमत पेश कर दी।

तीर्थ, व्रत, कर्म, आचारा यह अटकावें मग में ।

कहते हैं, अब गौर से सुनिये, तीर्थ कैसे बने ? कभी वजह इसकी आपको मालूम हुई ? वहां कोई महापुरुष सुरतवन्त रहा, जिसने हकीकत को पाया। योरुशलम सब ईसाई दुनिया का तीर्थ है, क्योंकि क्राईस्ट वहां हुआ और भी तो कई लाखों पैदा हुए कि नहीं ! मक्का मदीना, हजरत मुहम्मद साहब वहां हुए इसलिये सब मुसलमान दुनिया का वह तीर्थ है। इसी तरह और जितने तीर्थ हैं, हिन्दोस्तांन में या और किसी जगह- गया में महात्मा बुद्ध हुए, वह सब बोध दुनिया का तीर्थ है। इसी तरह और जितने हर एक धर्मों के जो तीर्थ हैं वहां महापुरुष रहे। गुरु नानक साहब जहां पैदा हुए, तलवन्डी नाम था, अब ननकाना साहब बन गया। अरे भई और भी तो लाखों वहां पैदा हुए थे कि नहीं ? केवल एक ऐसी हस्ती जो उतरी आई, उसके कारण से वह तीर्थस्थान बन गये। तो कौन बड़ा हुआ भई ? बताइये आप। कबीर साहब कहते हैं -

झगड़ा एक निबेड़ो राम ।

हे राम, मेरे दिल में एक बसवसा (संशय) बन गया, आप फैसला करिये -

तीर्थ बड़ो कि हरि का दास ।

एक हरि का दास कई जगह बैठा, कई तीर्थ बन गए। कौन बड़ा हुआ भई ?

हम में क्या कमी है ? हम सचमुच साधु की तो कीमत नहीं करते। चले जाते हैं कि महाराज बड़े महात्मा हैं। जीते जी की कदर नहीं। गुरु नानक साहब को कुराहिया (पथभ्रष्ट) कहा गया। कसूर शहर में उन्हें दाखल नहीं होने दिया। पलटू साहब को जिन्दा जला दिया गया। गुरु अर्जुन साहब को तत्ते तवों पर बिठा दिया गया, शम्सस तबरेज की खाल उतरवा दी। फिर Christians जो थे उनको जिन्दा जलाया गया। यह हालत है दुनिया की। फोटो से तो काम लेंगे, घर में फोटो लगायेंगे सब महात्माओं की, Past की, जिन्दा महात्मा की पूजा कहीं नहीं। मुर्दा-परस्त मत बनो भई। जिन्दा परस्त बनो। जिन्दगी को पा जाओगे। हां हमारे दिल में उन सब महापुरुषों के लिए इज्जत है। वह न होते तो आज हमें तालीम का कोई पता न होता। उनकी गवाही हमको मिलती है। हमारा Statment जो दिया जाता है उसकी प्रौढ़ता होती है। हमारे दिल में उनकी भी इज्जत है अब भी, मगर अब किसी जिन्दा महापुरुष की जरूरत है जो तुम को Way up (अर्न्तमुख) कर सकता है। बड़ी मोटी बात। तालीम वही है, जो परम्परा से चली आई। कोई नई तालीम नहीं। मगर हम भूलते रहे, महापुरुष उसको ताजा करते रहे। हम अपने घरों को कागज़ी फूलों से तो आरास्ता करेंगे (सजाऐंगे) सचमुच फूलों को नहीं। वह काम हम Pamphlets से (पुस्तकों से) लेना चाहेंगे। अरे भई जिन्दा, चलता फिरता इन्सान किताब जो प्रभु की है, उसकी तरफ नजर नहीं गई। फिर यह है, कभी किसी समाज में आप आयें तो बड़े प्यार से कहते हैं, तीर्थ पर, खाली तीर्थों पर जो नहा आये, पाप धोये गये।

इक भा लत्थी नहातियाँ, तेदो भा चढ़ गई और ।

यह कबीर साहब कहते हैं -

जल के मज्जन जे गति होय, तां नित नित मेंडक न्हाये ।

कबीर साहब फरमाते हैं, कहते हैं -

दिल दरिया की माछरी गंगा बहि आई।
अनिक जतन से धोबई तौहु बास न जाई ॥

अरे भाई जिसम की सफाई क्या करेगी ? तीर्थ स्थान एकान्त जगह थी। वहां दुनिया के झंझटों से आजाद हो कर, जाओ। थोड़ी देर को एकान्त को पाकर महापुरुषों की चरणों में बैठ कर हकीकत की तरफ वक्त लगाओ। इसलिये थे तीर्थ स्थान। Make the best use of them. तीर्थ बुरे नहीं। तीर्थ का जो बर्ताव हमने बना लिया, वह ग़लत बन गया।

मैं हरिद्वार गया। वहां हर की पौड़ी पर कई बार Talks दी, तो एक दिन मैंने कहा कि यह वही है तीर्थ, जहां पर गुरु नानक साहब आये। गुरु अमरदासजी हर साल आते रहे और ऋषि,मुनि, महात्मा यहां कई आये। आज यह वही जगह है, जहां स्टेशन से उतरो तो रास्ते में दो सिनेमा मिलते हैं। एक भाई उठा, कहने लगा, नहीं महाराज अब तीन हैं। अब के मैं गया था, कहने लगे अब चार हो गये। बताओ तीर्थ का क्या कसूर है ? आगे मैं अपना तजरूबा बताता हूं, जो जाते थे, पैदल जाते थे। भक्तिभाव में जाते थे। प्रभु की याद करते थे। वहां जा कर किसी महात्मा के पास जाते, कोई एकान्त सेवन करते थे। अब खाओ, पियो और मजे लो। स्वामी विवेकानन्द ने कहा, जब ट्रेवेन्ड्रम मन्दिर में Talk दी है, कि जो पाप हम बाहर दुनिया में करते हैं वह तो शायद परमात्मा बख्श दे। जो पाप हम धर्मस्थानों में करते हैं, वह परमात्मा भी नहीं बख्शेगा। हम उस Atmosphere (वातावरण) को गन्दा करते हैं, खराब करते हैं, जलील करते हैं। अगर एक जगह भी एकान्त रखो, वहां दाखल होंगे, वहां पहिले उस (प्रभु) की याद हो। यहां जो लोग आते हैं, मैं यही ताकीद करता हूं कि भई दाखल होते हो, दुनिया को बाहर, इस गन्दे नाले के पार छोड़ आओ। यहां सिवाय गुरु की याद, प्रभु की याद, प्यार के और कुछ न रहे। मगर नहीं, हम लोग Atmosphere को गन्दा करते रहते हैं। तो तीर्थ का कसूर नहीं। मैं इसलिए यह खोल कर बयान कर रहा हूं कि जो सिर्फ यही समझते हैं, जनूब (दक्षिण) के शमाल, (उत्तर) को, मशरिक (पूर्व) के मग़रिब (पश्चिम) और मगरिब के मशरिक को भटक रहे हैं, खाली हाथ लगाने की खातर ! Inner way up नहीं है। अरे भई नेक कर्म तो जरूर है, आना जाना बना रहेगा। Way up नहीं होगा, प्रभु अभी दूर है। ''हनोज दिल्ली दूरस्त '। फिर कहते हैं व्रत आदि - व्रत से भई ठीक है, व्रत रखना अच्छा है, पेट साफ रहता है। सेहत अच्छी रहती है। मगर यह कहो खाली व्रत रखने से, जिसने व्रत रखा भई आज अन्न नहीं खाना, चलो क्या कहना चाहिए, दो सेर दूध पी जाओ, आधा सेर खोवा खा जाओ। आज और कुछ नहीं खाना। फल ही पांच दस सेर खा जाओ। अरे भई खाने को तो Control करना है। मतलब यह था कि कुछ अपने परजब्त, खुदज़ब्त बने कुछ सेहत के लिए, कुछ खुदज़ब्ती के लिए। हम तीर्थों पर जाते हैं, जब वापस आते हैं, तो क्या कहते हैं ? क्या छोड़ आये ? जी मैं प्याज छोड़ आया। तो मैं यह कह रहा था कि व्रत रखना खुद-ज़ब्ती के लिये था। पेट की सफाई और सेहत के बरकरार रखने के लिए था। अपनी जो खाने पीने की चेष्टा है, उसको कन्ट्रोल में लाने के लिए था। व्रत अच्छी चीज है, मगर यह ख्याल हो कि व्रत रखने से चार गुना ज्यादा खा जायें तो यह मतलब नहीं। जितना पेट खाली

हो, हज़रत मुहम्मद साहब कहते हैं, उतना खुदा के नूर से भर जाएगा। वह कहते हैं आधा हिस्सा खाने से भरो, चौथा हिस्सा पानी से और चौथा हिस्सा खाली रखो। जितना पेट खाली होगा, उतना तुम Alert रहोगे, चेतन्य रहोगे, उतना ही ज्यादा बैठने के काबिल होगे, कुछ होगा ।

एक दफा महर्षि शिवव्रतलालजी थे। उनके पास एक आदमी सुबह आया। कहने लगा, महाराज मुझे आलस आता है बैठने को। कहने लगे पेट की तरफ ध्यान दो। कोई आया, जी मेरा मन भटकता रहता है। कहने लगे पेट की तरफ ध्यान दो। कोई कहता रहता बीमार रहता हूं। कहते हैं, पेट की तरफ ध्यान दो। अरे भई पेट पर कन्ट्रोल करने के लिए यह था व्रत। लोगों ने रस्म बना ली। बस। रस्म की चीज जो है। अच्छा कर्म किया है, उसका फल अच्छा मिलेगा। यही पिया को पाना जो है ना, प्रभु का, वह नहीं। वह इन्द्रियों के घाट से ऊपर होगा। जब आप इन्द्रियों के, जबान की इन्द्री में कैद हो, उसके कन्ट्रोल में हो, खाने पीने की हविस है, इससे ऊपर नहीं आते तो कैसे उस रस को पा सकते हो ? तो कहते हैं क्या करो, ''तीर्थ, व्रत, कर्म, आचारा'' । नेक कर्म करो, ठीक है। उसका फल नेक मिलेगा। Action reaction होगा। जब तक तुम Doer (कर्ता) हो, उसका Action reaction होगा। नेक करो, नेक फल,बद करो बुरा फल। इसलिये भगवान कृष्णजी ने कहा, कि नेक और बद कर्म दोनों ही जीव को बांधने के लिए एक जैसे हैं जैसे सोने की बेड़ी और लोहे की बेड़ी। यह पितरियान मार्ग है, इसमें आना पड़ा रहेगा। अरे भाई जो देवियान पन्थ है, Way-up करके Light and sound principle अन्दर इज़हार करे, इन्द्रियों के घाट से ऊपर आने की जिसकी ए.बी.सी. शुरू होती है। वहां जाने से आना जाना खत्म होगा। इसीलिये सनातनी भाईयों में आता है कि भई दीवा मंसाओ नहीं ता बेगता मर जाएगा। अन्तर इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ कर ज्योति का विकास होगा वह रूह वापस क्यों आयेगी। यही भगवान कृष्णजी कह रहे हैं। That is the way back to God. (वह रस्ता है प्रभु को जो जाता है) तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं आचार अच्छा बन गया, भई ठीक है, नेक कर्म है। अच्छा स्वर्ग मिल जाएगा। जब तक Conscious co-worker of the divine plan के नहीं बनते, आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ कर उसके (प्रभु के) Mouthpiece नहीं बनते, तब तक आना जाना खत्म नहीं होता।

जब एह जाने मैं किछ करता, तब लग गर्भ जून में फिरता ।

कहते हैं, इस भूल में मत रहना भई। बड़ी साफगोई की है। यह तुम्हें रस्ते ही में रखेंगे।

चाले थे हरि मिलन को, बीच ही अटकियो चीत ।

वह निज में, जो घट में था, Invert (अन्तर्मुख) नहीं हुए, इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आये, हकीकत तुममें दबी हुई आई और दबी हुई चली गई। तुम भूखे के भूखे मर रहे हो। आना जाना बना रहेगा। तो बड़े साफ लफ्जों में बयान कर रहे हैं। हर एक चीज की अपनी अपनी कीमत है। ठीक है। मगर असल कीमत क्या है ? कि तुम्हारी आत्मा का विसाल हो प्रभु से। सदा का सुहाग पा जाओ। बराती न बनो, तुम्हारी आत्मा का विसाल हो प्रभु से, इसलिये बनो।

मीराबाई सदा सुहागन, वर पाया अविनाशी ।

इस सदा के सुहाग को पाओ।

जब लग सत्गुरु मिले न पूरे, पड़े रहोगे अध में ।

कहते हैं, जब तक कोई अनुभवी पुरुष नहीं मिलेगा, जो सत का स्वरूप है, तब तक तुम्हारा यह बाहरी भटकना बना रहेगा। वह तुमको इन्द्रियों के घाट से ऊपर ले जाता है। मैंने अभी कहा था कि सन्तों की तालीम श्रुति मार्ग है, सुरत इन्द्रियों के घाट से, Invert हो, अर्न्तमुख हो कर Higher contact में चली जाये, उस महारस को यह पा जाये, बाहर के रस फीके पड़ जायेंगे। जो सुरतवन्त है वही तुमको सुरत की साईन्स देगा। सन्तों की तालीम सुरत का मार्ग है, इन्द्रियों के घाट की तालीम नहीं इससे फायदा उठाना है। Make the best use of them. जो अपराविद्या है, उससे फायदा उठाओ, और सुरत को सुरत बना कर अपने जीवन आधार से जुड़ जाओ। यह है तालीम सन्तों की। तो कहते हैं, जब तक सत्गुरु, सत का जो स्वरूप हो चुका है, वह नहीं मिलता है, इन्सान भटकन ही में रहता है और ज्यादातर महात्मा आपको ऐसे मिलेंगे जो बाहरमुखी Elementary steps के महात्मा हैं। ठीक है। हमारे दिल में उनकी इज्जत है, जितना वह काम कर रहे हैं। मगर अगर हकीकत को पाना चाहते हो, जो हकीकत शनास (हकीकत को जानने वाले) हैं, उनकी सोहबत में बैठो। उसका नाम कुछ रख लो। उसको सत्गुरु कहते हैं ।

वह इन्सान है, हमारी ही तरह इन्सान है, मगर अनुभव को पा चुका है। Mouthpiece of God. है। वह Conscious co-worker in the divine plan. (प्रभु में अभेद) है। वह कहता है, वह (प्रभु) कर रहा है, मैं नहीं कर रहा। ऐसे पुरुष की सोहबत में तुम भी हकीकत को पा जाओगे। नहीं तो इन्सान Elementary steps (शुरुआत के बाहरी साधनों) में रहता है, कभी कर्मकाण्ड में, कभी बुद्धि के विचारों में। जब तक बुद्धि भी स्थिर न हो, आत्मा

का साक्षात्कार कैसे हो सकता है ? अब आप देखिये, कितना खोल कर पेश कर रहे हैं। अब सत्स्वरूप हस्ती हमें क्या बतलाती है ? आगे बयान करते हैं,गौर से सुनिये -

नाम सुधारस कभी ना पाओ, भरमो जोनी खग में ।

कहते हैं, नाम के महारस को तुम कभी नहीं पा सकोगे। आना-जाना बना रहेगा। नाम किसको कहते हैं ?

''नाम के धारे खण्ड ब्रह्मण्ड।''

जो God into action power (इजहार में आई प्रभु सत्ता) खण्डों ब्रह्मण्डों को आधार दे रही है, उसका नाम, 'नाम' है। उसमें दो चीजों का Expression है। एक Light एक Sound principle. अभी एक किताब छप रही है नाम के मुतल्लिक (हजूर की रचित अंग्रेजी पुस्तक का इशारा है) इसमें (स्टेज पर बैठे तिब्बती लामा को सम्बोधन कर के हजूर ने कहा) ''आपने जो प्रमाण बुद्ध धर्मग्रन्थों के भेजे थे, I have reproduced in that (वह मैंने उस पुस्तक में दे दिए हैं) उसमें दिया है कि महात्मा बुद्ध ने अपने शिष्यों को बुलाया और पूछा कि आपको Golden समाधि (समाधि की उच्चतम अवस्था) कैसे मिली है ? तो हर एक ने अपना अपना अनुभव पेश किया तो आखर महात्मा बुद्ध कहते हैं कि जो आने वाली Generation (पीढ़ी) है, Let them know उनको जानना चाहिए कि Sound principle is the only way. अर्थात् शब्द मार्ग ही एक रस्ता है कि जो उस (प्रभु) को पाने का तरीका है।

तो सब महापुरुषों ने एक ही रस्ता बयान किया है। तो जिसने पाया है, वह तुमको देगा, नहीं तो कैसे हो सकता है ?

भीखा बात अगम की कहन सुनन में नाहिं।
जो जाने से कहे ना, कहे सो जानें नाहिं ।।

The secrets of transcendence can not be uttered. वह कहने सुनने की चीज़ नहीं। वह अनुभव की चीज़ है। जब तक अपना अनुभव नहीं, देखा नहीं, तुमको Conviction (विश्वास) हो नहीं सकता। तो सन्तों का मार्ग है हकीकत को देखना - Seeing is above all. जो देखते हैं और दिखा सकते हैं। लोगों को भी वह आँख बना देते हैं जिससे वह नजर आने लग जाये। तो सब महापुरुष, जब भी आये, इसी बात का जिक्र करते रहे। सूरदासजी ने भी यही कहा -

सूरदास समझ की या गत ज्यों गूंगे गुड़ खाई ।

कहते हैं, यह देखने की बात है। जो देखता है, वही देखता है ना ! दूसरे को तो बयान नहीं कर सकता ! और दूसरा - हाँ जो Way up कर दे (जिसे रस्ता दे दे) वह देखता है कि हाँ it is there. हाँ में हाँ तो मिला सकता है। मगर दूसरों को बयान क्या करें ? जो इस राज़ से नावाकिफ हैं, वह क्या कह सकते हैं ? मैंने देखी, Countries देखी, बड़े Intellectuals (बुद्धि के पहलवान) जो Heads (अगुआ, धर्माचार्य) समझे जाते हैं समाजों के। वह क्या कहते हैं ? अन्तर में कुछ भी नहीं, ऐसे ही खुशी के इज़हार के लिए बनाये गए हैं। आप बताए ऐसे लोगों को क्या कहें ! अगर हजारों चमगादड़ बैठ कर फैसला कर दे कि सूरज कभी नहीं हुआ, फिर ! अगर Inner way (अन्तर) जाने वाले कहते हैं, अन्तर में Light of God (प्रभु की ज्योति) है, Inversion (अन्तर्मुख जाने) से मिलती है। हाँ दूसरे की आंख बना दो, वह हां करेगा, नहीं तो सब दुनिया अन्धेरे में जा रही है। इसीलिए कबीर साहब ने कहा, ''या जग अन्धा'' सारा जहान ही अन्धा है। सब Blind हैं, आंख खुली नहीं। कहते हैं, एक दो हो उनको तो भई समझाया जाये, जिस तरफ नजर मारो, सब अन्धे बैठे हैं। बड़े Sweeping remarks हैं, पर हैं सही। जो इन्द्रियों के घाट पर बैठे हैं, अन्तर की आंख नहीं खुली, हकीकत को नहीं देखने वाले, वह गवाही कैसे देंगे ?

दादू साहब ने कहा कि मैंने यह बात जो कही, कोई होगा जो मेरी गवाही देगा। जो देखने वाला होगा, बाकी तो सब बाहरमुखी हैं।

पण्डित काजी भेख सेख, सब अटक रहे डग डग में।

जो बाहरी, बाहरमुखी, अपराविद्या के उपदेशक हैं सिर्फ, जो मजहबों के ठेकेदार हैं कह दो, उनसे यह चीज नहीं मिलेगी। यह Inner way up जिनका है, उस राज़ से वाकिफ़ हैं, उनसे यह चीज मिलेगी। बाहर के लिए जो काम कर रहे हैं मगर Inner way up (अन्तर रस्ता न खुले) न हो, इन्द्रियों से जब तक Body consciousness से Rise above नहीं करते (अर्थात् इन्द्रियों के घाट से ऊपर नहीं आते) Inner eye (अन्तर की आंख) नहीं खुलती, Light and sound principle, जो Way back to God है, मिलता नहीं, आपकी रूह उसमें दाखल नहीं होती, तब तक हकीकत नहीं खुलती। इस राज़ के वाकिफ़ से यह चीज मिलेगी। प्रचारको से जो इस राज़ से नावाकिफ़ हैं, सिर्फ Elementary steps लिए खड़े हैं, कोई तो जिसम को पुष्ट बना देगा, कोई Will force (मानसिक शक्ति) को Strong (मजबूत) कर देगा। कोई थोड़ी Supernatural power (ऋद्धि सिद्ध) को De-

velop (प्रगट) करा देगा। अगर Direct self analysis कहो, आत्मा (सुरत) का, मन इन्द्रियों से आजाद हो कर अपने आप का अनुभव और Higher contct में जाना कहो, यह किसी अनुभवी पुरुष से ही मिलेगा, इन लोगों से नहीं मिलेगा। बड़ी साफगोई की है। आगे बताऐंगे कहाँ मिलेगी ?

इन संग पिया नहीं मिलना, पिया मिले कोई साध समध में ।

किसी अनुभवी पुरुष की सोहबत में तुमको प्रभु मिलेगा। जिसने पाया है, जो सुहागवन्ती है, वह तुमको सुहाग दे सकेगा, Inner way up (अन्तर का अनुभव) दे सकेगा। जो बाहरमुखी, Elementary steps (बाहरी साधनों) में है, वह तुमको अपने Elementary steps सिखाऐंगे। मगर जब तक आप इन्द्रियों के घाट पर बैठे हो, Kingdom of God cannot be had by observation बहुत साफ बात है। कितनी साफ़गोई है ! यह निन्दा नहीं, चीज की Value (कीमत) पेश कर रहे हैं। जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाते हैं वह देखते हैं, वह दिखा सकते हैं। Son knows the father and others whom the son reveals. जो खुद ही नहीं देखता, फिर ! भाई इस भूल में न रहना, जो काम कर रहे हो ठीक है। उसकी हर एक की कीमत है। मगर जब तक अन्तर के राज़ का, हजूर हमारे फर्माते थे, अन्दर जाने वाला महात्मा नहीं मिलता, यह Door closed (रस्ता बन्द) रहता है। तो आप समझे !

भीखा भूखा को नहीं सबकी गठड़ी लाल ।
गिरह खोल नहीं जानते तां ते भये कंगाल ॥

ऐ भीख, दुनिया में कोई भूखा नहीं, जड़ और चेतन की ग्रन्थी जब तक नहीं खुलती, हम जिसम का रूप बने बैठे हैं। जब तक यह, Self analysis (आत्म को चिन्ह कर) Rise above नहीं करता, हकीकत दबी हुई आती है और दबी हुई चली जाती है। जन्म व्यर्थ चला जाता है। मनुष्य जीवन में ही यह हम काम कर सकते हैं, बाकी में नहीं।

जो तो भूले बिखै बास में, भरम धसे तिनकी रग रग में।

कहते हैं, भाई आप भरम में है, आप भरम में है, वह आपको कैसे निकालेंगे ? जिसने खुद देखा नहीं, वह Conviction से कह नहीं सकता। जिसने देखा है, वह कहता है, All right have it. बैठो, देखो। थोड़ा मिला है, आगे रोज़ अभ्यास करके और बढ़ा लो। वह (अनुभवी पुरुष) यकीन से, Conviction से, देख कर बयान करता है।

सुन सन्तन की साची साखी, सो बोलें जो पेखें आखी ।

अब लोग बयान करते हैं -कबीर साहब को एक पण्डितजी मिले, उसको कहने लगे -

तेरा मेरा मनुवा कैसे इक होई रे ।

ऐ पण्डित ! तू आलिम है, फाजल है, ज्ञाता है, सब कुछ है, मगर तेरा मेरा मन कभी मुत्तफिक (सहमत) नहीं होगा। कहते हैं क्यों ?

मैं कहता हूं आँखन देखी, तू कहता कागत की लेखी ।

मैं तो देख कर बयान कर रहा हूं। I say what I see and you quote from the books. इसलिये Clear-cut (स्पष्ट) चीज जो देखे वह हां में हां मिलायेगा। जिसने देखी ही नहीं वह क्या कहेगा ? तो बड़े प्यार से समझा रहे हैं कि इनकी सोहबत से पाओगे। जिनका अपना कुफ़र (नास्तिकता) नहीं टूटा वह तुम्हारा कैसे तोड़ेंगे ? सवाल तो यह है।

जिसने आप नहीं देखा - मैं West में गया। वहां पर वह पूछने लगे, The way you express the truth is so simple. हकीकत का बड़ा सादा, थोड़े लफ्जों में बयान है How has it become hard to understand. तो यह मुश्किल क्यों बन गई ? तो मैंने उनको कहा, Those who had no first-hand experience of the truth were beating about the bush तो मैने कहा Well simple truth is there तुमने इन्द्रियों के घाट से ऊपर आना है। समझे ! Way-up हो जाए। अपने आप कर सकते हो तो कर लो, नहीं तो किसी की मदद ले लो। You will see for your own self. तुम खुद देखते हो, खुद देख कर बयान करते हो, वहां गवाही की क्या जरूरत है ? गवाही तो वहां जरूरत है ना, शौक दिलाने के लिए। जब तुम्हारी खुद अपनी आंख बन जाए। जिससे वह नजर आता है, फिर किसी की गवाही की जरूरत नहीं। यह सब ग्रन्थ पोथियां हमारी गवाही हैं। इनकी भी जरूरत है। यह न होते तो मुआफ करना मानता ही कौन ?

बिना सन्त कोई भेद न पावे, वह तोहे कहें अलग से ।

कहते हैं, जो इस राज़ का वाकफ है, वह तुमको बिठाकर Way up कर देगा, और आप खुद कहते हैं कि मुझे थोड़ा या बहुत here it is. You are welcome here. जो चाहे आये। सारा जहान तो नहीं चाहने वाला। लोग कई कहते हैं भाई सबको यहां बिठाओ, उपदेश दे दो। भई जो चाहने वाले हैं, सौ हों, पचास हों, साठ हों, बैठ जाओ भई। एक चीज को Grasp करना है। (समझना है) Theory precedes practice. एक चीज़ को समझ लेने के लिए यह सत्संग है। जब समझ आ जाए, जो रास्ते पर चलना चाहते हैं, उनको दस, बीस, पचास, सौ हों, Like a class वह अलग कर देते हैं।

जब लग सन्त मिले नहीं तुमको, खाये ठगोरी तू इन ठग में।

कहते हैं, जब तक कोई अनुभवी पुरुष, जो इन्द्रियों के घाट से ऊपर जाता है, इस राज़ का वाकफ़ है, वह नहीं मिलता, तुम बाहरमुखी साधनों में, कभी इन्द्रियों के साधनों के ज्ञान में रहे, कभी प्रमाण में, कभी अनुमान में, Inferences (नतीजे) निकालते रहे, कयास (कल्पना) से काम लेते रहे, कहते हैं, बाहरमुखी ही रहे। जो अनुभवी पुरुष होगा तुमको Way up करेगा, तुमको कुछ Experience थोड़ा या बहुत, अपनी अपनी Background (संस्कारों) के मुताबिक देगा। दिनों दिन Develop करके (बढ़ाकर) तुम उसी हकीकत को पा सकते हो जिसको उसने पाया है। खोल कर बड़ा Clarify करके चीज पेश कर रहे हैं।

राधास्वामी सरण गहो तो, रलो ज्योति जग मग में।

राधास्वामी लफ्ज गुरु के लिए कहीं बरता गया है, कहीं प्रभु के लिए। सब महापुरुषों की अपनी बाणी है। कहीं तो उस परमात्मा परिपूर्ण जो Absolute God है, उसके लिए यह बरता गया, मालिक कुल के लिए कहो, जिस पर वह इजहार हो रहा (प्रगट) है, उसके लिए भी बरता गया है। कहते हैं, जब तक तुम किसी अनुभवी पुरुष की शरण में नहीं जाते, तुमको यह Way up (अन्तर का रस्ता) नहीं मिल सकता है। तुम्हारी आत्मा ज्योति है, वह महान ज्योति में नहीं मिल सकती है। यह शब्द था स्वामीजी महाराज का जो आपके सामने रखा गया। सन्तों की तालीम जो मैंने पहिले अर्ज की, यह न सामाजिक है न Political है। हरेक समाज मुबारिक है। बड़े Noble purpose (उच्च उद्देश्य) से बनाई गई थी, समाजें,यह Schools of thought हैं, जिसमें हम दाखल हुए थे हकीकत को पाने के लिए। हमने प्रभु की फौज में दाखल होना था। यह Recruiting centers (प्रभु की फौज में भरती होने के केन्द्र) थे। नतीजा क्या हुआ ? प्रभु तो गया भूल, हम समाजों की फौजों में दाखल हो कर आपस में लड़ रहे हैं। समझे !

चाले थे हरि मिलन को बीच ही अटकियो चीत ।

जो अनुभवी पुरुष है, वह तुमको इन झगड़ों में नहीं फंसाता है। वह कहते हैं, रहो, किसी समाज में रहना बरकत है। हर एक समाज में महापुरुष आये। वह (प्रभु) Inner way up (अन्तर रस्ता खुलने) होकर मिलेगा, Right way लेकर। Religion किसको कहते हैं ? Re का मतलब है वापस, Ligio शब्द Ligament से निकला है, जिसके मायने हैं To band, जोड़ना। तो अपनी आत्मा को, सुरत को Overself से, परमात्मा से जोड़ने का नाम Religion है। जो Way back to God है (प्रभु को जाने का रस्ता जो है) यह सबका एक है। उसके Elementary steps आसान भी है, मुश्किल भी हैं। जो प्राणों से Start (शुरु)

होता है, वह तो है मुश्किल, Time consumping (लम्बे समय का) है। फिर Dangerous (खतरनाक) है। We are hereditarily not fit for it. (शारीरिक लिहाज से हम प्राणायाम के कठिन साधन के योग्य नहीं) जो Natural way (कुदरती रस्ता) है, वह यह कि कोई महापुरुष Way up करके (सुरत को पिण्ड से ऊपर लाकर) Inner light and sound (अन्तर प्रभु को ज्योति और श्रुति या ध्वनि) से जोड़ देता है। और वह (शब्द) तुम्हें Absolute God (अनामी प्रभु) में लय कर देता है। बस।

तो अन्तर की, जो सन्तों की तालीम है, वह सब मत की रक्षक है। न पुराने को तोड़ता है न नये बनाने की हिदायत देता है। वह कहता है जो है ठीक है। चलो इन्द्रियों के घाट से ऊपर-जब आप इन्द्रियों के घाट से ऊपर आ गए तो आपको कौन सा मत और कौन सा मजहब रह गया ?

जात पात पूछे नहीं कोय, हरि को भज सो हरि का होय ।

जब तक चित्तवृत्ति का निरोध नहीं होता, तब तक यह काम नहीं बनता। तो यह स्वामीजी महाराज का शब्द था छोटा सा जो आपके सामने रखा गया।

(यहां पाठी ने यह भजन गाया)

हमको वह अपना जलवा दिखा कर चले गये।
दिल में वह प्रेम बाण लगा कर चले गये ।।
यह तेरा काम है कि तू ही उस पे गामजन ।
मुर्शिद तो राह हक़ की बता कर चले गये ।।

महापुरुष आते हैं, रस्ते पर डाल जाते हैं। जो उनसे मिलते हैं, वह रस्ते पर पड़ जाते हैं। जब वह चले गये फिर कोई और महात्मा उस को ताजा कर जाता है।

जिन्दा वही है जिसका गुरु से है दिल लगा ।
यूं तो बहुत जहान में आ कर चले गए।।

जिन्दा पुरुष कौन है ? गुरु नानक साहब ने तारीफ की है -

जो जीवया जिस मन बसिया सोय ।
नानक अवर न जीवया कोय ।।

जिसके अन्तर वह प्रभु प्रगट हो गया, वह तो जिन्दा, बाकी सब मुर्दा हैं। जिन्दा के पास बैठ कर तुम भी जिन्दा हो जाओगे। बात समझ आई ?

जिन्दा वही हैं जिसका कि सावन से दिल लगा ।
यूं तो बहुत जहान में आ कर चले गये ।।
हमको जो अपना जलवा दिखा कर चले गये ।
दिल में वह प्रेम बाण लगा कर चले गये ।।
शाहाने दैर जिन के थे नामो निशां बुलन्द ।
नौबत वह चन्द रोज़ बजा कर चले गये ।।

हमारे दिल में उनके लिए भी इज्जत है, जो महापुरुष आगे आये। Past gurus are also needed. हमारे दिल में उनके लिए बड़ी भारी इज्जत है, क्योंकि उस रस्ते के वह रहबर (पथ प्रदर्शक) थे, और आज भी हमें किसी ऐसे की जरूरत है, जो हमें Way up कर सके। बात तो यह है।

ऐ जमाल चाहता तू सावन शाह और क्या ।
परदा दुई का दिल से उठा कर चले गये ।।

अब गुरु मिलता है तो सारी दुनियां एक सी नजर आती है। सब भ्रम मिट जाते हैं। अन्तर का राज़ खुला तो कौन हिन्दु, कौन मुसलमान, कौन सिख, कौन ईसाई ! सब आत्मा देहधारी मालूम होते हैं सबसे प्यार हो जाता है। यह गुरु की महिमा है। वह आंख खोल देता है, जिससे कि सबसे एक नजरी बन जाती है। सबसे प्यार हो जाता है।

नैय्या कर दो पार गुरु जी नैय्या कर दो पार ।
तुम बिन और न कोई सहारा सूझत वार न पार ।।
नाव पुरानी चप्पू ना बल्ली, आन पड़ी मंझधार ।
कुटुम्ब कबीला काम न आवे सब मतलब के यार ।
सत्गुरु मैं तुमरी कृपा बिना किस बिधि उतरूं पार ।
दुख सागर संसार है प्यारे पग पग ऊपर भार ।।
निज दर्शन की भिक्षा दीजो नहीं तुम सा दातार ।
तुम दर्शन बिना सूनी अंखियां ज्यों प्रीतम बिन रंक ।
मैं हू अधम अती नीचा तुम हो सिरजन हार ।।

जो भी महापुरुष दुनिया में आये, जिनकी आत्मा इन्द्रियों के घाट से ऊपर गई, इस जिसम के पिंजरे से ऊपर आये, वह सब एक ही बात कहते हैं, जो बाहर आ गये, वह यही कहते हैं, कि यही एक Way up है। जो खुद उस रस्ते पर हैं, तुमको उस रस्ते डाल देते हैं। उनका नाम कुछ रख लो। किसी समाज में मिले, कहीं मिले, उनकी सोहबत में तुमको भी यही हकीकत मिलेगी । ❑

गुरु की महिमा

हजूर सन्त कृपालसिंह जी महाराज

क्या कोई रोगी किसी पुराने जमाने के प्रसिद्ध हकीम या वैद्य से अपनी बीमारी का इलाज करवा सकता है ? क्या कोई फरियादी पुराने जमाने के किसी न्यायमूर्ति न्यायाधीश से अपने मुकदमे का फैसला करा सकता है ? क्या कोई स्त्री किसी पुराने जमाने के शूरवीर से ब्याह कर के सन्तान उत्पन्न कर सकती है ? कदापि नहीं। यह बातें सम्भव नहीं तो कोई परमार्थभिलाषी किसी गुजरे महात्मा का आश्रय लेकर परमात्मा में लीन कैसे हो सकता है ? सन्त महात्मा अपने-अपने जमाने में दुनियां में आये। जिन्होंने उनकी शरण ली उन्हें जन्म मरण से, आवागमन से मुक्त किया। समय पूरा होने पर सांसरिक शरीर को त्याग दिया और परमात्मा में समा गये परन्तु संसार छोड़ने से पहले अपना आध्यात्मिक काम दूसरे महात्मा को सौंप गए।

यह प्रकृति का नियम है कुदरती असूल है, कि मनुष्य, मनुष्य को समझता है। परमात्मा इस स्थूल देश में अमर जीवन को प्राप्त सत्गुरु द्वारा ही काम करता है। कुछ लोगों का सवाल है कि पिछले महात्मा अब भी आध्यात्मिक मण्डलों में विद्यमान हैं और हमारी सहायता कर सकते हैं। आइये, हम उसी मजमून पर विचार करें। पिछले पूर्ण पुरुष अपना अपना काम पूरा करके मालिक में जमा समाए और अपना आध्यात्मिक काम कुल मालिक की इच्छानुसार पिछले महात्माओं को सौंप गए ताकि जीवों को मालिक से जोड़ने और उनकी सम्भाल का काम चलता रहे। यदि किसी पिछले महात्मा ने आध्यात्मिक काम करना भी हो तो वह प्रकृति के नियम का पालन करते हुए (जिसके अनुसार मनुष्य को केवल मनुष्य ही समझा सकता है।) किसी जीवित महापुरुष द्वारा ही करेगा। यदि हम उनकी निजी सहयता लेना चाहें तो हमें स्थूल देश छोड़ कर उन आध्यात्मिक मण्डलों में पहुंचना पड़ेगा जहां उनका निवास है।

अगर पिछले महात्मा रूहानी मदद कर सके तो हमें अपनी अन्तरीय विचारधारा, कल्पना का, सहारा लेना होगा परन्तु जब तक हमारी अन्तर की आँख न खुले हम यह निश्चय नहीं करसकते कि जो ख्याल पैदा हुआ है हमारे अन्तर में वह कुल मालिक की ओर से है अथवा किसी पिछले महात्मा, परलोक सिधारी अधूरी रूह की तरफ से है या हमारे मन की कपोल कल्पनी है। इसलिये उस ख्याल पर अमल करना गलती और भ्रम से खाली नहीं होगा। इसके

अलावा अगर हमने किसी महात्मा को देखा नहीं और शैतान या कोई और अधूरी रूह अन्तरी मण्डलों पर प्रगट होकर यह कहे कि ''मैं अमुक महात्मा हूं'' तो हम उस महात्मा को न पहचान सकने के कारण धोखे का शिकार हो जाऐंगे। मान लो कि पिछले महात्मा हमारे पथ-प्रदर्शक हो सकते हैं और समय के गुरु की आवश्यकता नहीं। ऐसी हालत में सवाल पैदा होता है कि पुराने जमाने में गुरु की जरूरत क्यों थी ? अगर गुजरे हुए महात्मा रूहानी तालीम देकर अब रूहों को मालिक से मिला सकते हैं तो कुल मालिक स्वयं यह काम कर सकता था। अगर जिन्दा महात्मा की जरूरत किसी जमाने में थी तो वह इस बात का प्रमाण है कि जिन्दा गुरु की अब जरूरत है और हमेशा रहेगी।

यह कुदरती असूल है कि इन्सान को इन्सान ही समझा सकता है।अगर कुल मालिक खुद भी आत्म-ज्ञान का प्रचार करना चाहे तो उसे मनुष्य का चोला धारण करना पड़ेगा। खुदा का असली मायना भी यही है, ''खुद आने वाला।''

साध रूप अपना तन धारया

(मारु महल्ला 5)

हमरो भरता बड़ो विवेकी, आपे सन्त कहावे

(आसा कबीर)

इसका मतलब यह नहीं कि पुराने महात्मा मर चुके हैं। वह तो अमर है। आवागमन और परिवर्तन से आजाद हैं पर स्थूल, सूक्ष्म और कारण मण्डलों को पार करके मालिक में अभेद हो चुके हैं। अगर उन्होंने इन निचले मण्डलों में ही फिरते रहना था तो फिर उनकी भक्ति करने की क्या जरूरत थी।

हमें इस कल्पित समस्याओं में उलझने की जरूरत नहीं। हमें किसी जिन्दा पूर्ण महात्मा की शरण लेनी चाहिए। वह मालिक को मिलने का आसान और कुदरती तरीका बतायेगा।

कुछ लोग कहते हैं कि मुक्ति मरने के बाद ही मिल सकती है। मरने से पहले नहीं। यह बिलकुल गलत है। हमें अपने उद्देश्य को पाने के लिए मृत्यु का इन्तजार करने की जरूरत नहीं, क्योंकि हम उसे गुरुकृपा से जीतेजी प्राप्त कर सकते हैं। गुरु के अन्दर महाचेतना (Higher consciousness) की मिकानीतीसी ताकत (Dymanic power) (आकर्षण शक्ति) है जिससे लगना, जिसका Touch, हमारे अन्दर ताकत भरता है, हमें Charge करता है और हमारी सुरत (आत्मा) को शब्द की धारा से जोड़ता है। वह रूह (आत्मा) बड़ी भाग्यवान है जो किसी ऐसे महात्मा के चरणों में पहुंच जाती है।

हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि यदि किसी ने लन्दन जाना हो तो वह लन्दन की यात्रा के बारे में विस्तृत जानकारी किसी पुस्तक द्वारा प्राप्त करता है। लन्दन किस तरफ है ? उसे किस रास्ते से जाना पड़ेगा ? किस बन्दरगाह से जहाज पर सवार होना होगा ? और किस कम्पनी के जहाज पर इत्यादि। वहां जाने के लिए उसे समय के हाकिम से राहदारी का पर्वाना लेना पड़ेगा। जितनी देर वह न मिले वह मंजिल की ओर प्रस्थान नहीं कर सकता। इसी तरह मालिक के देश में जाने के लिए भी उसके नायबों अथवा पूर्ण पुरुषों, सत्स्वरूप महापुरुषों से जिनका हुक्म खण्डों ब्रह्मण्डों पर चलता है, राहदारी का पर्वाना (Passport) लेना पड़ता है। वह राहदारी का पर्वाना, नामदान या दीक्षा है। जिन जीवों को यह राहदारी मिल जाए उनको खण्डों ब्रह्मण्डों पर कोई ताकत रोक नहीं सकती सारे सन्त इस बात पर सहमत हैं कि जिस मनुष्य की हृदय रूपी धरती में गुरु नाम का बीज डाल दे वह अवश्य फलेगा और वह मनुष्य अपने निज घर अवश्य पहुंचेगा।

दूसरी जरूरत इस बात की है कि हम उसकी तरफ जाने के लिए ठीक रस्ते को पकड़ें। यदि रस्ता उत्तर को है और पथिक दक्षिण की ओर चल पड़े तो वह चाहे कितने ही शौक और तेजी से चले, मंजिल पर नहीं पहुंचेगा बल्कि उलटे मंजिल से दूर होता जायेगा।

अगर किसी जगह जाने से पहले हम पढ़ रहे हो जानकारी के लिए और कोई हमें खबर दे कि अमुक आदमी वहां से आया है तो हम किताब छोड़कर उस व्यक्ति के पास पहुंचेगे क्योंकि उस जगह और रस्ते को जिसका हाल यह किताबें बताती हैं वह स्वयं देखकर आया है। अगर उसके पास जाकर हमें यह मालूम हो कि उसने वापस जाना है और हमें अपने साथ ले चलने को तैयार है तो हम खुशी-खुशी उसके साथ हो लेंगे। अगर कई किताबों के पढ़ने से उसके कथन का समर्थन हो जाए तो दिल को पूरी तसल्ली हो जाती है। सन्तों की रूहें खण्डों ब्रह्मण्डों पर विचरती है।

गुरुमुख आवे जाए निसंग

(रामकली महल्ला 1)

सारे धर्म ग्रन्थ उस सत्पथ का केवल इशारा देते हैं। सन्त अनगिनत रूहों को निजघर ले जाने वाले समरथ पुरुष है। हमें चाहिए कि उनसे टिकट या राहदारी लेकर (दीक्षित होकर) उनके नाम या शब्द के जहाज़ पर सवार हो जाऐं। वह उस जहाज के आप ही कप्तान हैं और हमें मालिक के देश में पहुंचा देते हैं। ❑

सत्गुरु मुझे कैसे मिले

(ले.- श्रीमती एम. गोर्डन ह्यूज़, केन्टकी, अमरीका)

1928 ई. की बात है। अप्रैल का महिना था। केन्टकी (अमरीका) में वसन्त ऋतु की बहार छाई हुई थी। सफेद नरगिस और पीले डेफोडिल के फूल हर तरफ खिले हुए थे। मैं दो बरस और सात महीने से बीमार चली आती थी। रोग से पीड़ित इस शरीर के बारे में मैंने जितने भी डॉक्टरों और विशेषज्ञों से पूछा उन सब ने यह कहा कि मैं कभी भी चल फिर नहीं सकूंगी। चलना फिरना तो दूर रहा मैं उठ के सीधी तरह बैठ भी नहीं सकूंगी।

आधी रात का समय था। एक भयानक स्थिर वातावरण में, उदास और अकेली मैं बिस्तर पर लेटी हुई थी। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं जीवन पथ के संगम पर पहुंच गई हूं जहां से मुझे एक नए अनजाने पथ पर अग्रसर होना है। मैं सोचने की कोशिश कर रही थी, बीते जीवन को याद करने, उसे फिर से पकड़ने की कोशिश कर रही थी। मैं मरना नहीं चाहती थी,मैं महसूस करती थी कि अभी मेरे लिए बड़ा काम पड़ा है, अभी मुझे कई काम करने हैं। रात की भयानक कालिमा ने मुझे चारों और से घेर लिया था। मेरा दम घुटने लगा। मैंने उठना चाहा। घबरा के किसी को पुकारना चाहा। पर कुछ भी न हो सका। मुझमें जान ही न रही थी। मैं पीड़ित और निराश मृत्यु की बाट जोह रही थी।

एकाएक मेरे कमरे के एक कोने में बड़ी तेज रोशनी हुई और देखते ही वह दिव्य प्रकाश बढता चला गया। इस प्रकाश के बीच में से एक दिव्य स्वरूप उभरा। मैंने ऐसी सुन्दर, ऐसे रोब-दाब वाली आकृति कभी न देखी थी। उसका कद लम्बा, छरेहरा बदन और मुखमण्डल दिव्य प्रकाश से दीप्त था। वह सुन्दर प्रकाशमान स्वरूप मेरे सामने आ कर खड़ा हो गया। उसकी सफेद दूधिया दाढ़ी जगमग-जगमग कर रही थी। उसकी स्वच्छ नीली आंखों में प्रभु-प्रेम और दया मेहर का दिव्य प्रकाश था। उन नयनों की चमक और उस प्रकाशमान दिव्यस्वरूप को देखकर ऐसे लगता था जैसे कोई फरिश्ता धूप में खड़ा है। उसकी पैनी दृष्टि दिल की गहराईयों में धँसती हुई जान पड़ती थी। उसकी पोशाक और उसकी पगड़ी बिलकुल सफेद थी, एल्पस पहाड़ के सबसे दुर्लभ एडिलविस पुष्प से भी ज्यादा सफेद और नरम, परन्तु इस सफेदी में अनगिनत रंगों की किरणें जगमगा रही थी। उसके सुन्दर हाथों की हथेलियां आपस

में मिली हुई थी और हाथ छाती पर रखे हुए थे। मैं समझी कि स्वयं भगवान मेरे सामने आकर खड़े हो गए हैं। मैं आश्चर्य भरी आँखों से टकटकी लगाए उसे देखने लगी। वह वहीं खड़ा प्यार और मेहरबानी भरी नजरों से मुझे देखता रहा। फिर वह धीरे-धीरे मेरी ओर बढ़ा और मेरे रोग पीड़ित शरीर में समा गया।

अगले दिन मेरे घर के लोग जो मेरी मौत की घड़ियाँ गिन रहे थे, यह देखकर हैरान रह गए कि मैं भली चंगी बिस्तर से उठकर इधर-उधर घूम रही हूं और मेरे शरीर में कोई भी रोग नहीं।

उन दिनों में मैंने महान् सत्गुरु का नाम भी न सुना था। परन्तु उस घटना के बाद मैंने उस दिव्य स्वरूप की खोज में जिन्होंने दर्शन देकर मेरा सारा दुःख हर लिया था दुनिया का कोना-कोना छान मारा। मैंने अपना एपिस्कोपचर्च छोड़ दिया और बारी-बारी विभिन्न आध्यात्मिक सिद्धांतों को अध्ययन किया और कई समाजों में गई, Christian science का White brotherhood आत्मज्ञान का Rosecrusian मत की गुप्त तालीम का, बहाई मत का, ''मैं कर्म हूं'' नाम की विचारधारा और कई दूसरे सिद्धान्तों का गहरा अध्ययन किया और विभिन्न समाजों में गई पर कहीं भी मेरी तसल्ली न हुई और हार के मैंने इन समाजों को छोड़ दिया। इस प्रकार कई बरस बीत गए। मैं अध्ययन करती रही, तलाश करती रही। मुझे कोई ऐसा व्यक्ति न मिला जो मुझे वह ज्ञान दे सकता जिसे मैं इतनी उत्सकुता से खोज रही थी।

इस तरह बीस बरस बीत गए। फिर सन् 1948 को अप्रैल के महीने में मैंने उस दिव्य स्वरूप को कई बार देखा। उनके साथ एक और दिव्य स्वरूप को कई बार देखा। इनके साथ एक और महापुरुष भी होते थे। कई बार ऐसा होता कि मेरी सुरत सिमट कर अन्तर आध्यात्मिक मंडलों पर पहुंच जाती और मैं वहां इन दोनों महापुरुषों का दिव्य स्वरूप देखती। इनमें से एक लम्बे पतले, नीली आंखों वाले और दूसरे गठे हुए शरीर वाले महापुरुष थे जिनकी काली आंखें कबूतर की आंखों की तरह थी। यह दोनों महापुरुष एक और महापुरुष से वार्तालाप करते दिखाई देते, जिनके बारे में मुझे पता चला कि वह सिक्खों के आदि गुरु श्री गुरु नानकदेवजी महाराज का दिव्य स्वरूप था।

मैंने अपनी तलाश जारी रखी।

एक और अप्रैल का महिना आया। यह सन् 1952 की वसन्त ऋतु की बात है।एक सहेली ने मुझे फोन किया। वह लास एंजिल्स से लुई विले होती हुई फ्लोरिडा जा रही थी। उसने मुझसे पूछा, ''तुमने डॉक्टर जूलियन जानसन का नाम भी सुना है जो केन्टकी में पैदा हुआ और वहीं रहा और फिर महान् सत्गुरु की खोज में वह भारत चला गया था।'' मैने जवाब दिया

कि मैंने तो आज तक यह नाम नहीं सुना। सहेली ने मुझे डॉक्टर जानसन की पुस्तकों के बारे में भी बताया और इस बातचीत के कुछ दिनों के बाद भारत से डॉक्टर जानसन की विख्यात रचना Path of Masters (सन्तों का मार्ग) मेरे पास पहुंच गई। इस किताब को पढ़कर मुझे महसूस हुआ कि मैं ठीक रास्ते पर हूं।

थोड़े समय पश्चात् मुझे वाशिंगटन डी-सी के श्री टी.एस. खन्ना का पता मिला और 29 सितम्बर 1952 ई. को मैं वाशिंगटन की राजधानी में पहुंची जहां सत्गुरु के इस कृपापात्र के द्वारा मैंने महान सत्गुरु से नाम लिया।

मैंने खन्नाजी से पहले सत्गुरु की तस्वीर मांगी और सत्गुरु दयाल श्री हजूर बाबा सावनसिंहजी महाराज की तस्वीर देखते ही मैंने तुरंत पहचान लिया कि यह तो वहीं दिव्य स्वरूप है जो मेरे रोग और सन्ताप हरने के लिए 1928 में मेरे पास आए थे। मेरी लम्बी खोज अब समाप्त हो चुकी थी।

1955 की जून के महीने वह गाड़ी जो हिज होलीनेस सरदार कृपालसिंहजी साहब को भारत से अमरीका की राजधानी में ला रही थी, वाशिंगटन के डी-सी के स्टेशन पर आकर रूकी तो मैं वहां स्टेशन पर खड़ी थी। मैंने उसे, बाबा सावनसिंहजी महाराज के बेटे को रूहानियत के सूर्य के पुत्र को, मोक्ष दाता को, प्रभु की दयामेहर का सन्देश लाने वाले रक्षक और पथ प्रदर्शक को, गाड़ी से बाहर आते देखा। बिल्कुल वहीं रंग रूप था जिसे मैं सहस्त्रदलकंवल में और उससे भी ऊपरी दिव्य मण्डलों में प्यारे बाबा सावनसिंहजी महाराज के साथ कई बार देख चुकी थी। वह सुन्दर थे, सौन्दर्य से भी बढ़कर सुन्दर। उनकी काली आंखों में मिकनातीसी की कशिश थी। उनके चेहरे की गहरी सीधी रेखाओं में एक अद्भुत सौन्दर्य था, दयामेहर की झलक थी। उनके लम्बे मजबूत शरीर की चाल ढाल में एक आज़ादी थी, शाहिन्शाहों की सी शान थी। यह था सतनाम के सन्त का जमाल, उसका जलाल ! किसने उसे देखा है ? कौन उसे भूल सकता है ?

उसने अपना दाहिना हाथ ऊपर उठाया। ''देखा'' उसने कहा ।

और मैंने देखा ।

श्रीमती एम.गोर्डनह्यूज़
लुईविले, केन्टकी

❋❋❋❋❋